Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017
RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vad 09 | 30 flrcj 2015 | eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

संघर्ष बनाम ताऊ देवीलाल

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

बचपन में एक गाना बहुत पंसद आता था - ''अपने लिए जीए तो क्या जीए, तू जी ए दिल जमाने के लिए'' फिर वह दौर आया कि एक संत सिपाही के साथ काम करने का अवसर मिला। अचानक वह दुनिया छोड़ गया तब आभास हुआ कि एक ऐसे इंसान के साथ काम कर रहे थे जो दूसरों के लिए जीता था। दीनबंधू सर छोटू राम भी सदैव यही कहते थे '' इस संसार में करोड़ें इंसान पैदा होते हैं और मरते हैं लेकिन जीना उसका सार्थक है जो दूसरों के लिए जीए।'' वास्तव में चौधरी देवीलाल एक संत थे। सत्ता में रहते हुए कभी गुमान नहीं हुआ, सत्ता चले जाने पर गम नहीं हुआ बल्कि प्रधानमंत्री की गद्दी मिली वो ताज भी श्री वी पी सिंह के सिर पर रख दिया। उनकी सोच गहरी थी कि वे बहुत सरल भाषा में सीधी बात करते थे इसीलिए लोग उन्हे ताऊ करते थे।

एक जागीरदार का बेटा खुद ही विनोभा भावे के भू-दान यज्ञ में कूद पड़ा और अपनी निजी जमीन तकरीबन 2000 एकड़ सर्व प्रथम मुजारों को दान दे दी। उन्होने सदा गरीब किसान, मजदूर, मजलूम की लड़ाई लड़ी व अपने असूल के साथ कभी समझौता नहीं किया- श्री वीपी सिंह कसौटी पर खरे नहीं उतरे तो चोधरी देवीलाल ने भी अपने हाथ खींच लिए। उड़ीसा में अकाल पड़ा, हरियाणा का मुख्यमंत्री होते हुए भी कालाछड़ी पहुंचकर वहा की परिस्थितियों के अनुरूप सरकंडे से फर्नीचर बनाने के कारीगर हरियाणा से ले गए और वहां के लोगों को प्रशिक्षण भी निशुल्क दिया व फर्नीचर की बड़ी खेप भी खरीद ली जो हरियाणा की सभी पंचायतों को दिए गए। उनका मानना था कि किसी को भीख नहीं सीख दो ताकि वह कमाकर खा सके और आने वाले समय में भी उसके हाथ में हुनर हो।

हरियाणा में बाढ़ आ गई गांव देहात में भारी क्षति हुई। चौ0 देवीलाल द्रवित हो उठे और सिर पे खुद तसला उठा लिया और सबसे आगे बढ़कर गांव-गांव में रिंग बांध बन गए, ऐसी थी उनकी सोच। गांव देहात के गरीब, किसान, मजदूर, मजलूम के साथ-साथ जय जवान-जय किसान के पक्षधर चौ0 देवीलाल के सैनिक भी याद कर रहे हैं। चौ0 देवीलाल और सैनिक में एक समानता यह भी है कि सहज में मांग नहीं रखता और दोनों कांग्रेस के सताए हुए हैं। चौ0 देवीलाल ने संयुक्त पंजाब में मुख्य पार्लियामैंटरी सचिव होते हुए प्रताप सिंह कैरों मंत्रीमंडल को ठोकर मार दी थी लेकिन दिल में कुछ मलाल नहीं रखा। अपनी बेटी की शादी में प्रताप सिंह कैरों जिसको वे भाई मानते थे न्योता देते हुए कहा कि वे बेटी के ताऊ को बुलाने आए हैं, पंजाब के मुख्यमंत्री को नहीं-बाकी इतिहास है।

(25 सितंबर 102वें जन्म दिवस पर विशेष)

चौ0 देवीलाल ने सदा सैनिकों और भूतपूर्व सैनिकों के दुखों को जाना और इसका खुलकर समर्थन किया लेकिन कुछ कारणों से कुछ कर ना सके जिसका खामियाजा आज तक सैनिक भुगत रहा है। वेतन आयोग में इनकी आवाज उठाने वाला कोई नहीं क्योंकि ''जिसके पांव ना फ्टी बुवाई, वो क्या जाने पीर पराई।'' सैनिक अपनी मर्यादा में है, अनुशासन प्रिय है, उसकी आवाज अब एक व्यक्ति के कमीशन के हाथ दे दी। क्या इस देश का सैनिक बाबू के साथ-साथ राजनीति का भी शिकार होता रहेगा और कब तक?

आज विडंबना है कि ''जय जवान-जय किसान'' एक नारा बनकर रह गया है या यह माने कि इतिहास के कोने में दफ न हो चुका है। आज सैनिक के साथ-साथ किसान की सुध लेने वाला कोई नहीं। अब की बात ही कर लें किसान का धान समर्थन मुल्य से भी कम बिक रहा है जबकि समर्थन मूल्य किसान की लागत कीमत भी पूर्ण नहीं करता। किसान के खेत को तो सदा ग्रहण ही लगा रहता है - कभी सुखा, कभी डूबा, कभी गर्ज तो कभी मर्ज से कभी निकल भी आए तो कर्ज के मकड़जाल से बचाने वाला कोई नहीं। दूसरों का अन्नदाता खुद प्रति दिन भूख से मरता। इतिहास गवाह है यहां सैनिक की अनेदखी होगी वहां राष्ट्र की सरहदें सुरक्षित नहीं होगीं। जहां किसान की अनदेखी होगी वह राष्ट्र कभी विकास नहीं कर सकता।

चौ0 देवीलाल ने चाणक्य वाक्य ''राजन सैनिक परिवारों की भलाई सोचो सरहदें स्वतः सुरक्षित हो जाएगीं, जिस दिन सैनिक को मांगना पड़ गया बर्बादी की कहानी शुरू समझो'' को मूलमंत्र मान सैनिक के साथ किसान का नाम जोड़ दिया- उनके शासनकाल में कृषि विकास की अनेकों योजनाएं शुरू हुई। आज किसान की दुर्दशा से वे द्रवित हो उठते। किसान को उन्हे कभी बिजली पानी का टोटा ना आने दिया। कृषि सैक्टर के लिए बिजली प्राथमिकता के आधार पर दी जाती थी। पानी किसान के हर खेत तक पहुंचे, उन्होने पक्की खालें सरकारी खर्च पर बनवाकर दी, किसान के खत के साथ लगते सरकारी पेड़ों में भी किसान को हिस्सा दिया क्योंकि उनकी छाया से कृषि उत्पादन में कमी आती है। कृषि में विविधतता, बागवानी तथा नकदी फसलों को प्रोत्साहन शुरू किया जो बाद में राष्ट्रीय स्तर पर लागू हुई। जब चौ0 देवीलाल ने किसान के ऋण की माफी की बात की तो सत्तासीन सरकार ने मजाक उड़ाया लेकिन मन, कर्म, वचन के पक्के ताऊ ने सत्ता में आते ही कर दिखाया। विरोध भी हुआ कि इससे बैंकों को क्षति होगी लेकिन उनकी सोच और नीयत रंग लाई। योजना सफल हुई और बाद में इस योजना को भी राष्ट्रीय स्तर पर लाए।

'k"k i`t&2 ij

'k"k i:t &1

अपनी बेटी अपना धन, कन्यादान, स्त्री शिक्षा, घुमंतू परिवारों की शिक्षा, गांव-गांव हरिजन चौपाल, विकलांग पैंशन, वृद्धा सज़्मान पैंशन योजना चौ0 देवीलाल की ही देन है। ''भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध'' वहीं सोच सकते थे। शासन आपके द्वार चौ0 देवीलाल लेकर आए और आम आदमी को पहचान दिलाई व जनशक्ति का आभास दिलाया। उन्होने कथन को पूर्ण कर दिखाया। ''हिज़्मत ए मर्दा, मरद ए खुदा।'' फ़्सल की बुवाई में देरी को देखते हुए सरकारी ट्रैज़्टरों से जुताई करवा सरसों की खेती कर दिखाई। आलू की कीमत गिरते ही चौ0 देवीलाल सक्रिय हो गए तथा ईरान से सीधा सौदा कर किसान के खेत तक वहां के ट्रक ले आए और किसान की डूबती नाव को बचाकर दिखाया। हर गांव को अनाज मंडी तक पक्की सड़क से जोड़ दिया।

चौधरी देवी लाल किसान, गरीब, मजदूर किसी की भी आपदा के लिए वे द्रवित हो उठते थे। उनके द्वारा किसानों के ऋण माफ करना तथा उनकी भूमि के रिकार्ड के उचित रख रखाव हेतू किसान पास बुक शुरू करवाना गरीब, किसान-काश्तकार के हित में महत्वपूर्ण प्रयास थे। सर छोटू राम जैसे महान नेताओं ने किसान के हित की बात सोची लेकिन किसान की हर दिक्कत, मौसम की खराबी, हर हाथ को रोटी, हर खेत को पानी, शिक्षा का प्रचार प्रसार, शहरीकरण की होड़ में देहात से शहर की ओर हो रहे पलायन की रोकथाम हेतू चौधरी देवीलाल ही सोच सकते थे। उनकी कथनी और करनी में अंतर ना था, वे गांधी जी के उपासक थे ज़्योंकि महात्मा गांधी जी ने कहा था कि वास्तविक भारत गांव में बसता है। भारत की 80 प्रतिशत आबादी देहात में बसती है लेकिन सुविधाओं की कमी इसी क्षेत्र में है। चौधरी देवीलाल ने देहात में ही सहुलियतें उपलज़्ध करवाने की सोची। प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक निश्चित मात्रा में पानी की उपलज़्धता, हर गांव तक पक्की सड़क, गरीब मजदूर के घर में एक बल्ब रोशनी के लिए प्रावधान, मानव तथा पशु चिकित्सा की व्यवस्था, गांव गांव में स्कूल तथा घुमंतू परिवारों के बच्चों को स्कूल में रखने के हाजरी के लिए प्रतिदिन एक रूपया देना। सरकार आपके द्वार कार्यक्रम शुरू कर देहात से पलायन को रोकने का प्रयास किया। बुढापा सज़्मान पैंशन योजना शुरू कर बुजुर्गो को सज़्मान दिया। महिला प्रसूति पर ज%चा-बच्चा योजना व सुखमय विवाहित जीवन हेतू कन्यादान योजना शुरू की। अतः ताऊ देवीलाल पूरे देश में समाज कल्याण एवं समाज सुधारक के रूप में सबसे प्रबल तथा प्रथम राष्ट्रीय नेता बने।

ताऊ देवीलाल का अटूट विश्वास वर्गहीन, जातिवाद धर्मविहिन, भेदभाव रहित और गुटविहिन लोकतांत्रिक व्यवस्था में था। उनकी राजनीति केवल जनहित पर आधारित थी। उनका प्रयास था समाज का शोषित वर्ग, शोषण मुक्त हो। ताऊ देवीलाल ने राजनीतिज्ञों के लिए लोकलाज के आदर्श के अंतर्गत आचार संहिता लाने पर बल दिया ताकि राजनीति में अनैतिकता को आने से रोका जा सके। उन्होने राजनीति को जीवन मूल्यों तथा जीवनादर्शों से जोड़ने का यत्न किया और वे चाहते थे कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा जनहित कार्य न करने पर आम जनता को उन्हे वापिस बुलाने का अधिकार का सर्वप्रथम नारा दिया।

जिस गिरते लिंग अनुपात के लिए भारत सरकार आज चिंतित हो रही है, चौधरी साहब ने 'कन्या दान' आज से 40 वर्ष पूर्व देकर समाधान दे दिया था। स्त्री शिक्षा पर उन्होने विशेष बल दिया था। मुफ्त वर्दी, पाठन सामग्री के साथ-साथ आठवीं तक निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान चौधरी देवी लाल ने दिया था ताकि शिक्षित नारी, घर परिवार को सुचारू रूप से चला सके, बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे सके। उनका कथन था कि नारी शिक्षा से दो परिवार शिक्षित होते हैं। मुफ्त साईकिल उन्ही के सपूत चौधरी औमप्रकाश चौटाला की देन है तथा घुमंतू कबीलों के परिवारों के बच्चों को स्कूल हाजरी का प्रतिदिन एक रूपया चौधरी साहब ने दिया जो चौटाला जी ने मंहगाई के मद्देनजर पांच रूपये कर दिया।

छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू-पट्‌टेदारी अधिनियम 1953 बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम के द्वारा 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकारी दिलाकर मालिकाना हक भी दिलवाया। सरकारी कोष से जारी धनराशी के सदुपयोग व ग्रामीण समाज के समुचित विकास के लिए ग्रामीण जनता द्वारा एकत्रित धनराशी पर सरकारी खजाने से दो या तीन गुणा अनुदान दिलाकर लगातार मैचिंग ग्रांट योजना शुरू करने व रा%य कोष से जारी धनराशी को सीधे पंचायत व ज़्लाक स्तर पर खर्च करने के पारदर्शी व स्पष्ट प्रावधान लागू किए।

जब राजनीति के गलियारों में ये चर्चा चलती है कि किस मुज़्यमंत्री ने लंबे समय तक कुर्सी से चिपककर सज़ा सुख भोगा या किस नेता ने केंद्र से जुगत भिड़ाकर सज़ा तक पहुंचने में कामयाबी हासिल की तो कई महानुभावों के नाम सामने आ जाते हैं परंतु यदि यह गिनती की जाए किस शज़्सियत ने जनता के हितों में संघर्ष करके विदेशी हुज़्मरानों से लेकर आपातकाल जैसा क्रूर अध्याय जोड़ने वाले नेताओं के राज में लबे समय तक संघर्ष करके जेल काटी हो तो उस फेहरिस्त में चौ0 देवीलाल का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा।

उन्होने साईमन कमीशन के विरूद्ध सत्याग्रह करके जेल की सलाखें से दोस्ती की थी वह दोस्ती 1985 के न्याय युद्ध तक बरकरार रही। जब कभी प्राकृतिक आपदा ओलावृष्टि, बाढ़ व तुफ़्रान आता तो वे सज़ा में होते हुए भी किसानों के खेत में उनके दुखों को बंटाने में अपना धर्म मानते थे। उस शज़्सियत ने लगभग सात दशक देश के राजनीतिक मानचित्र पर ऐसी इबारत लिखने में बिताए, जिसमें शोषण के खिलाफ एक संपूर्ण जिहाद की बात थी, जिसमें हर हाथ के लिए काम, हर पेट के लिए रोटी, हर खेत के लिए पानी, हर घर के लिए रोशनी और हर बसर के लिए एक छत का सपना था।

घर में जब उनके साथ न्याय नहीं होता था तो पारिवारिक मंच पर बचपन में ही प्रभावी ढंग से आवाज उठाते थे। इसी कारण घर वाले उन्हे रूलिया कह कर पुकारने लगे। इसी रूलिये ने रौला मचाकर 1977, 1989 व 1996-97 में कांग्रेस को सज़ा से बाहर का रास्ता दिखाया था। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में विशेषकर गरीब, पिछड़े व शोषितों को सज़्मानजनक स्थान दिलवाने के लिए प्रयासरत रहे। लाला लाजपतराय के नेतृत्व में निकाले गए साइमन विरोधी जलूस में शामिल होने के लिए वे गांव से पैदल चल दिए थे। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हे मुलतान जेल की हवा खानी पड़ी थी।

पंजाब से हरियाणा के हिस्से का पानी लाने का मुद्दा तो राजनेता सज़ा सुख भोगने के लिए छेड़ते हैं परंतु चौ0 देवीलाल ने सबसे पहले 6 नवंबर 1937 को भाखड़ा नहर परियोजना मुद्दे को उठाया था। संयुक्त पंजाब में हिंदी भाषा क्षेत्र की न तो सरकारी सेवाओं में नुमाइंदगी थी और ना ही विकास कार्यों में उसका वांछित हिस्सा था। एक तरफसे वर्तमान हरियाणा प्रदेश के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा था। उन्होने हरियाणा बनने का संकेत 14 मार्च 1961 को पंजाब विधानसभा में बोलते हुए कर दिया था कि यदि हिंदी भाषी क्षेत्रों के साथ इसी तरह सौतेला व्यवहार होता रहा तो इस क्षेत्र को पंजाब से अलग करना पड़ेगा। वे लगातार हरियाणा के अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहे।

चौ0 देवीलाल जनशक्ति को भगवान के बाद सबसे बड़ी ताकत मानते थे। अतः जनता की आवाज को बुलंद करने का वरदान उन्हे कुदरत से ही मिला था। सन 1952 में उन्होने सिरसा विधानसभा सीट से चौ0 शिवकरण गोदारा को हराकर जन प्रतिनिधि के रूप में पंजाब की विधानसभा से पर्दापण किया। वे कहा करते थे ''मैं हमेशा उन लोगों के साथ रहा हूं जो सरकार से बाहर रहते हैं तथा अपनी जायज मांगों के लिए लड़ते हैं।

संत फतेहसिंह ने पंजाब सूबा न बनने की सूरत में अकाल तज़्त पर आत्मदाह का ऐलान किया तो उस समय हरियाणा के हितों के सजग प्रहरी चौ0 देवीलाल अस्पताल में थे। डाज़्टरों ने उन्हे हस्पताल में रहकर ईलाज करवाने की सलाह दी परंतु अमृतसर गए। डाज़्टरों से उन्होने कहा कि मेरे मरने से हरियाणा बचता है तो इससे बड़ा परमार्थ कोई और नहीं हो सकता। इस तरह उनके नेतृत्व में संघर्ष के परिणामस्वरूप हरियाणा प्रदेश अस्तित्व में आया था।

आपातकाल में 19 माह की भारी जेल यातनाएं सहकर वे 26 जनवरी 1977 को जेल से रिहा हुए। बिखरे विपक्ष को इकट्ठा किया तथा जनता पार्टी के गठन में विशेष भूमिका निभाई। 23 जून 1977 को हरियाणा के पांचवे मुज़्यमंत्री बने। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्विरा करने में संकोच नहीं करते थे। इसीलिए उन्होने सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे पर 14-08-1985 को अपने तमाम विधायकों के साथ विधानसभा से इस्तिफा दे दिया। तत्पश्चात कांग्रेस की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जींद में एक ऐतिहासिक रैली करके प्रथम न्याय युद्ध की शुरूआत की और वर्ष 1987 में विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटें जीतकर नया रिकार्ड स्थापित करके दूसरी बार मुज़्यमंत्री बने। पंजाब में फैले आतंकवाद के आगे घुटने टेकते हुए राजीव गांधी ने पंजाब के अकाली संत हरचंद सिंह लौंगवाल से समझौता किया तथा हरियाणा के हितों की बलि चढ़ा दी।

हरियाणा को न्याय दिलाने व शहीदों को सज़्मान देने के लिए 23 जनवरी 1987 को रोहतक में चौ0 देवीलाल के नेतृत्व में सज़्मेलन हुआ जिसकी हाजरी का रिकार्ड अब तक नहीं टूटा है। सरकार में आने पर अपनी कलम से रावी व्यास का पानी हरियाणा में लाने की योजना बनाई। सन 1987 में लोकदल भाजपा सरकार बनी। चौ0 देवीलाल ने एक कलम से कर्ज माफ कर दिए, उन्होने भू मालिकों के शोषण से मुजारों को निजात दिलाई।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः लेखक एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को उनके 102वें जन्म दिन (25 सितंबर 1914) पर नत मस्तक होकर प्रणाम करता है।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त-सिंतबर 1999 से 6 सिंतबर 2001 तक चौधरी साहब के प्रशासनिक अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

लाल किले से

-राही, जयपुर

बचपन में सुनते थे, बुढ़ापे में देखते हैं। जबसे हमने होश संभाला है तब से लेकर आज तक और जिस साल हमारे पिताजी मरे थे उसके अगले साल से लेकर इस साल तक हमने दो काम निष्ठापूर्वक किए हैं। पहला तो पन्द्रह अगस्त को लाल किले से प्रधानमंत्रियों के भाषण सुने हैं और दूसरा हर साल निश्चित तिथि को पिताजी का श्राद्ध किया है। और इधर साठा-पाठा होते-होते दिमाग इस तरह गड्ड-मड्ड हो चुका है कि लाल किले की प्राचीर से भाषण सुनते ऐसा लगने लगा है जैसे हम अपने बापूजी का 'हांतै' (श्राद्ध) निकाल रहे हों। क्षमा करें। इसमें प्रधानमंत्रियों का कोई दोष नहीं। दोष तो हमारा है। हमारी मानसिकता का है। यूं भी लोकतंत्र में नेताओं का दोष होता ही नहीं। वे तो दूध ा के धुले बगुले हैं। गलती तो सारी जनता की होती है। और चूंकि हमारा शुमार इस देश की **'बेचारी जनता'** में होता है इसलिए हमें ही भुगतना पड़ेगा। अपनी जन्मपत्री को ठोकर न लग जाए इसलिए इस बार भी नहा-धोकर, दाढ़ी-वाढ़ी बनाकर टीवी के सामने दही की तरह जम गए पर प्रधानमंत्री का भाषण सुनते-सुनते 'खट्टी-छाछ' में बदल गए। हम ढूंढते रहे कि प्रधानमंत्री जी ने हमारे मतलब की क्या बात की। पर हमें कुछ भी हाथ न लगा। हालांकि कई बार अंधे के हाथों बटेर लग ही जाती है। प्रधानमंत्री जी ऐसे बोलते रहे जैसे पिछले साठ साल में कुछ हुआ ही नहीं और जो कुछ हुआ वह बस उनके **'एक साल'** में ही हुआ है। अब इतना बड़ा आदमी, इतना शानदार कुरता-जाकेट पहन, इतनी जोरदार पगड़ी बांधकर बड़ी ताकत के साथ हाथों को ऊपर-नीचे करके कुछ कह रहा है तो जरूर सच ही कह रहा होगा। पर पता नहीं क्यों हमारे कानों तक आते-आते वह सच 'अर्द्धसत्य' सा 'असत्य' में बदल गया था। हम लोकतंत्र को हाजिर नाजिर मानकर कहते हैं कि इसमें भी हमारी ही 'गलती' है क्योंकि प्रधानमंत्री तो गलत हो ही नहीं सकते। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि महंगाई दर घटी है पर महंगाई तो कम हुई ही नहीं। दाल, चावल, सब्जी, गैस, कापी-किताब क्या सस्ता हुआ? पीएम ने कहा कि भ्रष्टाचार न हुआ हो पर हमारा तो जीवन में उस बड़े दफ्तर से कोई काम ही नहीं पड़ा और न ही पड़ने वाला है। जिन महकमों में हमें काम पड़ता है वहां तो कोई कमी नजर नहीं आती। प्रधानमंत्रीजी हर बार एक काम जोरदार करते हैं नाम बदलने का- पहले 'योजना आयोग' को 'नीति आयोग' और इस बार कृषि मंत्रालय को 'किसान कल्याण मंत्रालय'। अजी हम अपना नाम 'राही' से उलटकर 'हीरा' कर लें तो क्या हमारी कद्र और कीमत बढ़ जाएगी? जी नहीं। खैर प्रधानमंत्री जी का भाषण सुनकर हमने राष्ट्रीय कर्मकांड का निर्वाह किया हमें बस यही संतोष है। आप भी तीन बार बोलें- **'जय हिंद'**।

(रा. पत्रिका से साभार)

INSECURITY IN MEDICAL HEALTH CARE

(Ram Niwas Malik, 9911078502)

Avinash, a 7 year old boy of Delhi was suffering from Dengue and died for want of timely medical health care on 09-09-2015. The parents, a young couple, had to take the suffering boy to a chain of 5 private hospitals, who refused to admit him on the pretext of shortage of beds. Finally, the boy was brought to Batra Hospital. But it was too late. The doctors could not save the boy as his condition had deteriorated beyond recovery during the transit period of 7 hours. The distraught couple was shocked beyond measure and decided to commit suicide and leave this insensitive world along with their off-spring.

The news came in all the newspapers on the front page the very next day and created a small commotion. The electronic media which has built a reputation for orchestrating trivial issues (Sheena murder case was covered for 8 days at a stretch.) conspicuous by its silence. Only two channels raised the issue through a panel discussion five days after the episode. Had it been a case of police negligence, Mr. Kejriwal would have been the first person to raise the alarm against Delhi Police and other politicians would join him in the blame game. Now there is no body to shed tears for Avinash and his family.

Another boy, Aman Sharma 6 years of age also died in similar circumstances on 15th September. Delhi Govt. which considers itself as the sole champion of the common man simply served a show cause notice to the five hospitals though seriousness of medical negligence on the part of five hospitals required registration of an FIR. Delhi Govt. has allotted lands to private hospitals at a nominal cost with the advisory that 20% beds will be reserved for poor people. But the govt. never bothers to check the implementation of this order. Mr. Shashi Tharoor was very right when he recently said in a lecture at I.I.T. Delhi, "India is the biggest democracy in the world but also a land of utmost hypocrisy." Looking at the collapse of various systems and sub-systems in the public domain, one feels Indian democracy has now remained of the powerful, for the powerful and by the powerless. Mr. Arnab Goswami rightly commented in his Times Now channel (14-9-2015), "Had Avinash been the son of a politician or a bureaucrat, he would have been treated with utmost care and free of charge by every hospital".

Like any other system in the country, public health system too is in a grave crisis. Quality medical treatment has become a big worry and has created a sense of insecurity for the common man. He has lost faith in the Govt. hospitals because he knows, "There are big queues in the OPDs. A doctor hardly spends two minutes per patient. Many doctors have passed from ill-equipped private medical colleges and some are from reservation category. The surgical instruments are not safe. Beds are inadequate. Many patients lie on the floors leading to serious cross infections. Some of the machines are out of order. Bathrooms are stinking. Post operative health care is inadequate. There is unethical tie-up between the doctors and the medical shops located nearby." The treatment by ruling elites in private hospitals (rather than our top medical institutes) has further caused this trust deficit. Sh. A.B. Vajpayee, the then Prime Minister of India, got his knees replaced in Jaslok Hospital Mumbai. The surgeon was called from US. Mrs. Sonia Gandhi went to Ganga Ram Hospital for the treatment of her respiratory problems. Wife of Sh.P.S. Badal, the CM of Punjab, died in a US hospital. An MLA from Haryana Assembly once got admitted in Medical College, Rohtak because of a heart ailment. The Chief Minister admonished him and asked him to go to a private hospital in Gurgaon. You can cite innumerable examples of this kind. However, Dr. Man Mohan Singh, the then Prime Minister of India got his by-pass surgery in AIIMS.

*Simultaneously, the common man is also afraid of going to a private hospital because of heavy consultation fee, high cost of tests and surgical operations, unnecessary, unwanted tests and surgeries prolonged stay in the hospital. Now he is standing at the cross roads and does not know where to go for a safe and affordable treatment. The Govt. and the bureaucracy consist of very thick skinned people (Anil Vij, the Health Minister of Haryana is an exception). They just don't bother to know or look at the plight of poor people in the ill equipped hospitals and take remedial measures. Now many people suggest that if politicians and bureaucrats are made to take treatment in govt. hospitals only (or in private hospitals at their own cost), the conditions of govt. hospitals will improve overnight. There is lot of merit in this statement. UP High Court has recently passed an order that wards of politicians and govt. servants of UP be made to study in govt. schools only. Let us hope that somebody files a PIL writ in the Supreme Court and the Hon'ble Court passes a similar order for govt. servants to take medical treatment in the govt. hospitals only. In such a depression scenario, one only exclaims, "**God save the common man in India!"***

*****

भारतीय कृषि का अवलोकन

-सूरजभान दहिया

कृषि भारतीय सभयता की आत्मा है और कृषि उत्पादन में वृद्धि भारत की अर्थव्यवस्था के विकास को इंगित करती है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरूजी ने 'आइडिया आफ इंडिया' के संदर्भ में दो बातें कही थीं– एक आधुनिकता एवं कृषि विकास हेतु शुन्य प्रतीक्षा की। दूसरी बात लाल बहादुर शास्त्री ने आधारभूत कृषि को भारतीय आर्थिक व्यवस्था की रीड की हड्डी मानकर 'जय जवान, जय किसान' का उद्घोष किया जिसके पश्चात कृषि विकास का भारत में एक ज्वर आया और हरित क्रांति का सूत्रपात हुआ।

हरित क्रांति को 45 साल हो गये हैं और हमारी नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन की 2014 की रिपोर्ट बताती है कि किसान परिवार की मासिक आय 3078 रूपये है। यदि कोई महिला किसी शहर में रहती है और घरों में काम करती है तो वह मासिक 4000–5000 रूपये आसानी से कमा लेती है। दस साल पहले यानी 2004 की सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक किसान की औसम मासिक आय 2115 रूपये थी। वर्तमान आय में यदि हम मुद्रा स्फीति की दर का समायोजन कर तुलना करें तो किसान की वर्तमान मासिक आय में विशेष अंतर नहीं आया है। उसकी हालत जैसी पहले थी वैसी ही अब भी है। शहरों में काम करने वाले चपरासी की न्यूनतम आय 15000 रूपये मासिक है और किसान परिवार की आय 3000 रूपये के आसपास। इसी एनएसओ की 2004 की रिपोर्ट कहती है कि देश में 47 फीसदी किसान खेती छोड़ना चाहता है। देश की 50 फीसदी कार्य शक्ति–किसान भारतीय अर्थव्यवस्था में सिर्फ 14 फीसदी योगदान दे पा रहा है। यह अति भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई है कि पिछले 17 वर्षों में तीन लाख से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं। किसान का आर्थिक–शोषण एक सोची–समझी रणनीति के अंतर्गत हो रहा है। अगले दशक में भारत की खेती का इसकी जी.डी.पी. में योगदान 10 फीसदी तक ला दिया जाएगा। हालात दिन–प्रतिदिन खराब होते जा रहे हैं– करीब 58 फीसदी किसानों को रोज ही भूखे सोने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। 'जय–जवान, जय–किसान' की भावना 'मर जवान–मर किसान' के अभिशाप में बदल गई है।

यदि इस परिस्थिति की समीक्षा करते हैं तो हम पाते हैं कि सरकारी नीतियों में कृषि की अनदेखी की जाती है। जब 70 फीसदी किसानों के पास एक हैक्टेयर से कम जमीन है और चालीस फीसदी से अधिक किसान मनरेगा जॉब कार्ड धारक हैं। तब यह अपने आप साफ हो जाता है कि पिछले कुछ वर्षों में खेती–किसानी किस तरह घाटे का सौदा बनकर रह गई है। वैसे तो एन.एस.ओ. हमें यह बताता है कि 15.61 करोड़ ग्रामीण घरों में 58 फीसदी घर कृषि से जुड़े हुये हैं। इसका मतलब है कि इन परिवारों में कम से कम एक सदस्य या तो कृषि कर रहा है अथवा पशुपालन से जुड़ा हुआ है। लेकिन सच्चाई क्या है? सच्चाई यह है कि खेती से जुड़े ये परिवार निरंतर उपेक्षा तथा संवेदनहीनता के शिकार हो रहे हैं। 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि के लिए कुल बजट आबंटन एक लाख करोड़ रूपये था। 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत अगले पांच सालों में बजट आवंटन बढ़कर डेढ़ लाख करोड़ रूपये हो गया। वर्ष 2014–15 में 58 फीसदी आबादी को रोजगार उपलब्ध कराने वाली कृषि को केवल 24000 करोड़ रूपये मिले। दूसरी ओर इस वर्ष उद्योग सेक्टर को 5.73 लाख करोड़ रूपये की केवल कर छूट प्राप्त हुई। और भी विचित्र यह है कि मनरेगा तक को कृषि की तुलना में अधिक बजटीय आबंटन मिला।

जब कृषि को जानबूझकर सरकारी फंडिंग से दूर कर दिया गया है तो इसके गंभीर चिंताजनक नतीजे होने ही थे। राहत की एकमात्र बात किसानों को दिया जाने वाला न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी है। इसमें भी यह गौर करने लायक है कि पिछले तीन वर्षों में गेहूं और चावल के समर्थन मूल्य में प्रतिवर्ष केवल 50 रूपये प्रति क्विंटल की वृद्धि हुई है। यह देश में अन्य चीजों की बढ़ती महंगाई के अनुरूप ही नहीं है। किसानों को सहारा देने की बजाय ऐसे हरसंभव प्रयास किये जा रहे हैं जिससे सरकारी खरीद की प्रक्रिया ही समाप्त हो जाये। इसका मतलब होगा कि किसानों को बाजार की मनमानी के हवाले कर देना। यहां यह जानना जरूरी है कि केवल 8 फीसदी किसानों को ही एमएसपी की सुविधा मिलती है और हर लिहाज से 92 फीसदी किसान उस निजी व्यापार पर निर्भर बने रहते हैं जो उसका शोषण करता रहा है।

बहुत बार दूसरी हरित क्रांति लाने की बात उठती है। पहली हरित क्रांति केवल अस्थायी प्रकरण था। हम किसानों पर तकनीक का बोझ लादते जाते हैं। अंदाजा लगाकर देख सकते हैं कि पिछले 50 वर्षों में रसायनिक खाद, उन्नत बीज, मशीनों आदि की लागत कितनी बढ़ गई होगी, लेकिन पिछले 20 सालों में किसान को उपज बेचकर मिलने वाले दाम मुद्रा स्फीति को नजर में रखकर देखें तो स्थिर होकर रह गये हैं। हमें अब दूसरी हरित क्रांति नहीं बल्कि किसान खुशहाली क्रांति की जरूरत है। बाकि किसान अपने विवेक और स्थानीय तकनीक से कृषि उत्पादन बढ़ाने में सफल हो जायेगा।

मोटे तौर पर हमने अभी तक भूख की लड़ाई लड़ी है। हमने गेहूं का उत्पादन 1965–66 में 10.40 मिट्रीक टन से 95.85 मिट्रीक टन 2013–14 में कर दिया। इसी प्रकार चावल का उत्पादन 1965–66 में 30.59 मिट्रीक टन से 2013–14 में 106.65 मिट्रीक टन तक ले गये। परंतु इस प्रक्रिया में किसान को शोषण की सामग्री बना दिया। वर्तमान में भारत की 2 ट्रिलीयन रूपये की अर्थव्यवस्था है जिसे अगले दो दशक में रू. 4–5 ट्रिलीयन करने का लक्ष्य है। इसके लिए हम सिर्फ Skill India, Digital India, Make in India पर जोर देरहेहैं। Agri-India की

प्रमुखता को हम उपेक्षित कर रहे हैं। अब Stand up India (इजरायल Innovative Approach) का नारा भी आगे बढ़ा दिया गया है। हमें यह समझना होगा कि Team India (Peasantry Key Innovative Driver) को Innovative Agriculture Engine का लक्ष्य प्राप्ति हेतु आगे करना ही पड़ेगा। इसके लिए Path of Irrigation को सुदृढ़ करना पड़ेगा। आज भी 60–65 काश्त क्षेत्र Dry Land Farming के अंतर्गत आता है।

कुछ साल पहले पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम गुलबर्ग में छात्रों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने छात्रों से कड़ी मेहनत कर, डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और उद्यमी बनने का आह्वान किया। जब उन्होंने अपना भाषण खत्म किया तो एक युवा छात्र खड़ा हुआ और उसने कलाम जी से पूछा कि उन्होंने कृषि प्रधान भारत में युवाओं से किसान बनने को क्यों नहीं कहा? कलामजी अवाक रह गये और उन्होंने इस पर लंबा–चौड़ा तर्क भी दिया पर उनकी दलील को युवक ने खारिज कर दिया और खेती के खिलाफ जो पक्षपात हो रहा है उसे सामने रखा। भारत में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धता 1950–51 में 0.34 हैक्टेयर थी जो सिमटकर वर्ष 2000 में 0.17 हैक्टेयर तक हो गई थी। पिछले दशक में यह और घटकर 0. 12 हैक्टेयर रह गई है। अगर कुल कृषि भूमि की बात करें तो कृषि मंत्रालय के अनुसार 2007–08 से 2010–11 के बीच 20 राज्यों में 790000 हैक्टेयर भूमि गैर कृषि कार्यों के लिए बाहर निकल चुकी है। राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो 2003–04 से भारत में 189.19 लाख हैक्टेयर कुल कृषि योग्य भूमि थी। खेती की जमीन पर डाका डाला जा रहा है और किसानों की बेरोजगारी की कतार को बढ़ाया जा रहा है।

किसान एक मरती हुई प्रजाती बनती जा रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कृषि श्रमिक संख्या 144.31 मिलियन थी तथा काश्तकारों की संख्या 118.7 मिलियन थी यानी कृषकों से ज्यादा कृषि श्रमिक हो गये हैं। भारतीय किसान कर्जे के बोझ तले पैदा होता है, कर्जे में जिंदगी काटता है और कर्जे के तले ही मर जाता है, पर इस अभिशाप से मुक्त करने के लिए कोई किसान राहत योजना सरकार नहीं बना रही है। आज भी देश के आधे किसान कर्जे की मार में हैं। भारत विश्व गुरु बनने का सपना लिए हुये है। किसान को विश्वास में लिए बिना यह सपना साकार नहीं होने वाला।"Stand up India" का आह्वान किसान को प्रोत्साहित करके चलाना होगा। छोटे–छोटे किसानों की अगुवाई में निम्न बिंदूओं पर कार्यक्रम चलाने होंगे:–

1. फार्म फ्रैश रिटेल
2. फूड चेन
3. डेयरी उद्योग में फार्म महिलाओं की कमांड
4. फार्म टूरिज्म
5. फार्म स्किल स्क्सपोर्ट
6. नीति निर्धारण में किसान की सक्रिय भागीदारी
7. कृषि क्षेत्र में प्राथमिकता आधार पर पूंजी निवेश

कड़वी दवा

jkgh] t ; iqj

लीजिए साहब! हम तो अच्छे दिनों का इंतजार कर रहे थे और अच्छे दिन आने की बात कहने वाले वैद्य जी ने कह दिया कि कड़वी दवा पीने को तैयार हो जाइए। अब मोदी महाशय कह रहे हैं कि दो साल बाद अच्छे दिन आएंगे। पहले वाले डॉक्टर साहब कहा करते थे कि छह महीने में अच्छे दिन आ जायेंगें। हालांकि वे भी दो साल से आश्वासन की मिठी–मिठी गोलियां बांट रहे थे। पुराने डॉक्टर साहब और नए वैद्य जी में यही फर्क है। पुराने वाले डॉ. मन मीठी गोली देते रहे और अब नए वैद्य मोदी जी कड़वी दवा देने की तैयारी कर रहे हैं। सत्ता बदल गई। सत्ताधारी बदल गए। सरकार बदल गई। राज बदल गया। जो पहले हर रोज में पांच 'बेर' (बार) खाते थे अब वे दिन में पांच 'बेर' खाने को मजबूर हो गये हैं। अर्थात सब कुछ बदल गया लेकिन वादों की 'मीठी गोली' और आश्वासनों की 'कड़वी दवा' नहीं बदली। पुराने डॉक साब और नए वैद्य जी की एक बात से तो जाहिर है कि हम बीमार हैं। हम का मतलब इस देश का आम आदमी। कृपया भ्रमित न हों 'आम आदमी' और 'आम आदमी पार्टी' में ताालमेल न करें। हालांकि केजरीवाल साहब और चट्टे बट्टे खूब भ्रम फैला चुके हैं और भ्रम से डर कर हमने अपने आपको आम आदमी की जगह सामान्य इंसान कहना शुरू कर दिया। लेकिन जो जुमला पचासों बरसों से जुबान पर चढ़ा हुआ है वह महीने दो महीने में तो बदलने वाला नहीं हैं। बरहाल हम बातें कड़वी दवा की कर रहे थे। कसम राजनीति के चिकित्सकों की । अचकन में गुलाब का फूल लगा कर मोहक मुस्कान फेंकने वाले 'चाचाजी' से लेकर भरी गर्मी में कुर्ते पर जैकेट पहनने वाले 'भैया जी' तक जो भी आया उसने मीठी बातें की और बाद में झट से कड़वी दवा पिला दी। यह कहते हुए कि ये कड़वी दवा तुम्हारी (और देश की) सेहत के लिए सही है। दवा पीकर हम तिलमिलाने लगे तो वे बोले–भैया। देश के लिए त्याग करना जरूरी है। 'राष्ट्र' के नाम पर इतनी कड़वी दवा पी ली है कि अब कडवा भी मिठा लगने लगा है। बकौल चचा गालिब –दर्द का हद से गूजर जाना, दवा हो जाना।

निशानेबाजी में शेर जाटनी का जवाब नहीं

प्रकाशो देवी तोमर उत्तर प्रदेश के बागपत जिले की जोहड़ी गांव की एक जाटनी है, प्रकाशो देवी, चंद्रो देवी की रिश्ते में देवरानी है प्रकाशो तोमर के चार बेटे, बेटियां हैं। उनकी बेटी सीमा तोमर और पोती रूबी तोमर अंतर्राष्ट्रीय शूटर हैं।

पहली नजर में हट्टी–कट्टी प्रकाशो हर जगह मौजूद दूसरी अन्य बूढ़ी दादियों की तरह किसी भी तरह से अलग नहीं दिखतीं। लेकिन जब वह आपको घूर कर देखेंगी तब पता चलेगा कि वह कोई साधारण महिला नहीं है। प्रकाशो देवी के अनुसार जब मैंने निशानेबाजी सीखना शुरू किया तो गांव में मेरा बहुत मजाक उड़ाया गया। कोई कहता कि बुढ़िया ने नवाबों के शौक पाल लिए हैं, तो कोई कहता, बंदूक उठा ही ली है तो कारगिल चली जा, यह बताते हुए उनके चेहरे पर मुस्कान उभर आती है कि कैसे एक बार जब उन्होंने एक निशानेबाजी प्रतियोगिता में पुरुषों को हरा दिया, तो हारे हुए अधिकांश पुरुषों ने उनके साथ तस्वीरें खिंचवाने से मना कर दिया।

चेन्नई में वेटरं चैंपियनशिप के दौरान उपविजेता ने विजेता प्रकाशो तोमर के साथ मंच साझा करने से शर्म के मारे इनकार कर दिया। जब उन्होंने चेन्नई व दिल्ली में मेडल जीते तो पुरुष निशानेबाजों ने मेडल लेने के लिए मेरे साथ मंच पर खड़े होने से इंकार कर दिया था। क्योंकि उन्हें एक बूढ़ी औरत के साथ मंच पर शर्म महसूस हो रही थी।

प्रतियोगिताओं में प्रकाशों का पहला और सबसे यादगार पल था जब दिल्ली पुलिस के एक पुलिस उप–महानिरीक्षक (डीआईजी) गांव की इस महिला से हारने पर इतने शर्मिंदा हुए कि उन्होंने पुरस्कार वितरण समारोह का इंतजार भी नहीं किया और वहां से चले गये। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गांवों में लोग अक्सर बंदूकों का इस्तेमाल आपसी विवादों को सुलझाने के लिये करते हैं और इस क्षेत्र में पुरुषों को बंदूकों के साथ घमंड में चूर होकर चलते देखना आम बात है। 75 वर्षीय शार्प शूटर इस जाट दादी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बंदूकधारी पुरुषों के चेहरों को न सिर्फ शर्म से लाल कर दिया, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर उन्होंने अपनी उम्र के तीसरे पड़ाव में युवा लड़कियों को बाहरी दुनिया में बेधड़क होकर सामने आने के लिये प्रेरणा दी है। प्रकाशो तोमर (70) को यह शौक बचपन में नहीं बल्कि बुढ़ापे में लगा उनका कहना है कि ''जब मैंने बंदूक उठाई तो मुझमें अपार साहस और आत्मविश्वास आ गया''। उनके इसी आत्मविश्वास का असर उस क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं पर भी हुआ है। प्रकाशो उनके लिए रोल–मॉडल बन गयीं। प्रकाशो कुछ समय बिताने के लिये अपने पोते को लेकर जौहरी के बेसिक शूटिंग रेंज गयी थीं। वहां उन्होंने जिज्ञासावश एक बंदूक उठाई और कुछ गोलियां चलाईं, उस वक्त भी उनमें से लगभग सभी निशाने पर लगीं। उसके कोच राजपाल सिंह कहते हैं 'वह सहज थीं' और उस दिन से बंदूकें उनकी दिनचर्या में शामिल हो गयी। वह प्रतिदिन शूटिंग रेंज में अपने पोते को लेकर आती हैं और जैसे उनका पोता अभ्यास करता है वैसे ही दादी भी करती है। नियमित अभ्यास ने प्रकाशो को निशानेबाजी में प्रवीण बना दिया और अगले कुछ महीनों में जब तक वह पूरी तरह से निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के प्रति आश्वस्त हुईं, वह अचूक निशानेबाज बन चुकी थीं। प्रकाशो दादी ने कई प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और करीब 200 मेडल जीत चुकी हैं। प्रकाशो तोमर ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में लगभग 25 मेडल जीतकर रिकार्ड कायम किया। धीरे–धीरे वह निशानेबाजी की दुनिया में उतर आईं। 2001 में उन्होंने वाराणसी में 24वीं उत्तर प्रदेश राज्य निशानेबाजी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल किया। इसके बाद अब उनको भी याद नहीं है कि उन्होंने कितनी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अचूक निशाने लगाए और पदक जीते। वे राष्ट्रीय स्तर पर 25 से अधिक खिताब जीत चुकी हैं। एक प्रतियोगिता में एयर पिस्टर .32 बोर की यह महारथी पुलिस के डीआईजी को भी मात दे चुकी हैं। एयर पिस्टल 25 मीटर में उन्होंने 2001 में यूटी स्टेट चंडीगढ़ में सिल्वर, 2001 में अहमदाबाद में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में स्वर्ण, 2001 में तमिलनाडु में नेशनल प्रतियोगिता में स्वर्ण, 2002 में दिल्ली में नेशनल प्रतियोगिता में गोल्ड जीता। प्रकाशो कोयंबटूर में सिल्वर मेडल, और चेन्नई में सिल्वर मेडल जीत चुकी हैं। 2009 में सोनीपत में हुए चौधरी चतर सिंह मेमोरियल प्रतिभा सदन समारोह में उन्हें सोनिया गांधी ने सम्मानित किया। उत्तर प्रदेशीय महिला मंच के संस्थापक और कलम के योद्धा रहे स्व. वेद अग्रवाल की स्मृति में दिए जाने वाला साहित्य–पत्रकारिता–2011 पुरस्कार, 2006 में मेरठ में उन्हें स्त्री शक्ति सर्जन मिला। दादी की हिम्मत का फल है कि अब इस गांव की अगली पीढ़ी में भी कई और निशानेबाज तैयार हो रहे हैं। दादी को देख और भी महिलाएं इस खेल को अपनाकर कई स्पर्धाओं में भाग ले रही है। इतना ही नहीं कि दादी ने ही निशानेबाजी में झंड़े गाढ़ रखे हैं। उनकी बेटी सीमा तोमर और उनकी पोतियों ने भी कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सिर ऊंचा किया है। सीमा खुद एक अंतर्राष्ट्रीय शूटर हैं और तीन साल से वुमैन शूटिंग की राष्ट्रीय चैंपियन हैं। प्रकाशो तोमर किसान परिवार से हैं। ढेरों मेडल जीतने के बाद भी उनकी दुनिया नहीं बदली। वे आज भी घर के काम करती हैं और परिवार की देखरेख करती हैं। अधिक उम्र होने के बाद भी उनके जज्बे में कोई कमी नहीं आई है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy 27/5'10" BA/PGDCA(70%) from P.U. Employed in Punjab Co-operative Bank as Regular Clerk-DEO. Father Hr. Govt. Officer. Own flat at Panchkula. Preferred match from Panchkula/ Chandigarh. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bazar Cont.: 09876875845
- SM4 Jat Girl 27.2.1988/5'3" B.Com. MBA, LLB working in MLN Collage Yamunanagar. Avoid Gotra: Dadwal, Kadian, Cont.: 9416493264
- SM4 Convent educated Jat Girl 30.6/5'2" B.Tech. Employed as Manager in MNC with package of Rs. 13 lac P.A. Family settled in Panchkula, Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Cont.: 09988688762
- SM4 Jat Girl 24/5'1"+ B. Com, M BA Employed as Assistant Relation Manager in PNB Insurance. Pursuing P.O. Parents in Govt service. Family settled in Karnal. 17 Acre Land. Avoid Gotras: Malik, Lohan, Cont.: 09416850371, 09416203223
- SM4 Jat Girl 28/5'6" M.A Hons. B.Ed. Employed as Guest Lecturer in Govt. College, Panchkula. Family settled in Panchkula. Father working as Sub Divisional Engineer in HUDA. Brothers's own construction business. Avoid Gotras: Beniwal, Dabas, Sehrawat, Cont.: 09876944845, 09899294943
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.1991) 23.9/5'6" M.Tech. (CSE) Employed in a reputed University near Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana, Cont.: 0172-2277177, 07696844991
- SM4 Jat Girl 25.10/5'5" B. Arch. Working at Panchkula. Avoid Gotras: Tomar, Gahlayan, Jatrana, Cont.: 07206603248.
- SM4 Jat Girl 27/5'3" M.Sc B.Ed. Employed as Chemistry Lecturer (10+2) Gazetted in Haryana Govt. Family settled in Panchkula, Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra, Cont.: 09888912400, 9915805679
- SM4 Jat Girl (DOB 28.05.89) 26.4/5'1" BDS. Avoid Gotras: Nain, Sehrawat, Kundu, Cont.: 09217923554
- SM4 Jat Girl 25/5'6" M.C.A., B.Ed. Employed in M.N.C, Delhi. Avoid Gotras: Chhikara, Dalal, Tomar, Shokeen, Cont.: 09302951802, 09313433046
- SM4 convent educated Jat Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan, Cont.: 09888734404, 09466359345
- SM4 Jat Boy (DOB 14.04.87) 28.5/5'10" M.Tech. in Production & Mechanical Designing. Employed as Professor in Rayat Bahra University, Hoshiarpur (Pb.) Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Sehrawat, Kinha, Shokeen, Cont.: 09417555130, 09466953336
- SM4 Jat Boy 30/5'11" Doing M.D.S. (final year) from Dental College, Jaipur (Raj.) Family settled in Rohtak. Avoid Gotras: Jakhar, Moond, Dabas, Cont.: 09416255122
- SM4 Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in Vipra Co. at Banglore. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal, Cont.: 09417629666
- SM4 Jat Boy 29/5'9" B.Tech. Employed as Engineer in MNC. (Now settled in America for some time) Only son. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra, Cont.: 09888912400, 9915805679

मैं किसान क्या चाहता हूँ ?

& vkeiky vk;

चाह नहीं मुझे राजपाट धन दौलत और खजाने की,
ना मुक्ति की इच्छा है और ना ही स्वर्ग में जाने की।
जाति के गौरव गाथा के गीत बनाना चाहता हूँ,
गाने का कुछ ज्ञात नहीं, मैं फिर भी गाना चाहता हूँ।।
भूख गरीबी बेकारी ना बिमारी का नाम रहे,
अनपढ़ अज्ञान मिटे ना चोर जार शैतान रहे।
धर्म देश से पहले जाति, ये बतलाना चाहता हूँ,
जो कुछ भी जाति की खातिर भेंट चढ़ाना चाहता हूँ।।
दुर्गम हो चाहे कोई रास्ता, हवा चाहे अनुकूल ना हो,
कंकर, पत्थर बिखरे हों, चाहें ताप, धूप व शूल भी हो।
आंधी वर्षा सर्दी गर्मी से ना घबराना चाहता हूँ,
मैं धीरज के साथ सब कर्त्तव्य निभाना चाहता हूँ।।
आन बान और शान की खातिर अर्पित है तन,मन व धन,
बिना बान और शान के यारों सब कुछ हो जाता है निर्जन।
दुःख से पीड़ित मानव मन में प्यार बढ़ाना चाहता हूँ,
वन, उपवन मैदानों में मैं फूल खिलाना चाहता हूँ।।
ढ़ोंग और अंधविश्वासों को जड़ से जमा उखाडेंगें,
लोभ और लालच के कारण दुनिया नहीं उजाडेंगें।
सुधरेंगें और सुधारेंगें ये अलख जगाना चाहता हूँ,
हर प्राणी की सांस सांस में यह आश जगाना चाहता हूँ।।
ज्ञान और विज्ञान बिना ना और रास्ता न्यारा है,
सच्चा सुख भी वहां मिलेगा जहां पै भाईचारा है।
ओमपाल यह भविष्य हमारा है, मैं समझना चाहता हूँ,
दुनियां में अमन फैलाने का मैं सन्देश सुनाना चाहता हूँ।।

पंजाब के अंतिम महाराजा दिलीप सिंह की दुखद कहानी

& Mkå eghi flg

(शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह का विशाल साम्राज्य सतलुज से लेकर अफगानिस्तान की सीमा तथा चम्बा से तिब्बत की सीमा तक फैला था। इस प्रदेश को छोड़ कर लगभग पूरे भारत पर अंग्रेजों का अधिकार हो चुका था। जून 1839 को महाराजा रणजीत सिंह के देहान्त के बाद उत्तराधिकार को लेकर अनेक षडयंत्र हुये। जाट सिखों की आपसी फूट का फायदा उठा कर 1849 तक अग्रेजों ने पूरे पंजाब पर भी अपना एकाधिकार कायम कर लिया। मात्र 18 वर्ष बाद 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में पटियाला व जींद के जाट राजाओं की मदद से अंग्रेज दिल्ली को पुनः फतह करने में कामयाब हुए। डा. महीप सिंह का यह लेख उस समय की सियासत पर प्रकाश डाल रहा है।)

गत वर्ष इंग्लैण्ड में पंजाब के अंतिम महाराजा दिलीप सिंह की एक संगरमरमर की मूर्ति नीलाम हुई है। सिख क्षेत्रों में इस बात को लेकर बहुत उत्सुकता उत्पन्न हुई। शिरोमणि गुरूद्वारा मैनेजमेंट कमेटी (अमृतसर) तथा दिल्ली सिख गुरूद्वारा मैनेजमेंट कमेटी दोनों ने यह तत्परता दिखाई कि इंग्लैण्ड जाकर इस नीलामी में भाग लेकर उस मूर्ति को भारत लाया जाए। इसी बीच यह समाचार भी आ गया कि वहीं के एक धनाढ्य सिख द्वारा इसे लगभग 12 करोड़ रुपये (15 लाख पौंड) देकर खरीद लिया गया है। नीलाम करने वाली कंपनी बोनहाज्म ने मूर्ति का आरक्षित मूल्य 25 से 35 हजार पौंड ही रखा था, किन्तु यह मूर्ति उससे कई गुना कीमत पर बिकी। इस मूर्ति को ब्रिटेन के बहुख्यात मूर्तिकार ने महारानी विक्टोरिया के निर्देश पर 1859–60 में बनाया था। उस समय दिलीप सिंह की आयु 22 वर्ष की थी।

पंजाब पर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किस प्रकार अपना अधिकार जमाया था की यह कहानी बहुत त्रासद है। महाराजा रणजीत सिंह ने अपने 40 वर्ष के राज्यकाल में सतलुज से लेकर अफगानिस्तान की सीमा तथा चम्बा से लेकर तिब्बत की सीमा तक अपना विशाल साम्राज्य स्थापित किया था, यह कहानी भी कम रोचक नहीं है। इस प्रदेश को छोड़कर लगभग संपूर्ण भारत पर अंग्रेजों का अधिकार हो चुका था। किन्तु रणजीत सिंह के जीवनकाल में उस ओर देखने की अंग्रेजों की हिम्मत नहीं पड़ी थी। जून, 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हुई। सुयोग्य उत्तराधिकारियों के अभाव में वहां अनेक षडयंत्र जन्म लेने लगे। उसके ज्येष्ठ पुत्र खडग सिंह, पौत्र नौनिहाल सिंह और दूसरे पुत्र शेर सिंह की 5 वर्ष में ही हत्याएं हो गई। उस समय दिलीप सिंह की आयु मात्र 5 वर्ष की थी। उसे उसकी माँ, महारानी जिंदा के संरक्षण में महाराजा बनाया गया। पंजाब में उत्पन्न हुई अराजक स्थिति अंग्रेजों के बहुत अनुकूल थी। 1843 में उन्होंने सिंध पर अपना अधिकार कर लिया था। अब उनकी नजरें पंजाब की ओर थीं। पहला अंग्रेज–सिख युद्ध 1846 में हुआ। अद्भुत वीरता के प्रदर्शन के बावजूद, आंतरिक कलह के कारण सिख सेनाएं पराजित हो गई। दिलीप सिंह की आयु उस समय 8 वर्ष से कम थी।

पंजाब में आए अंग्रेज अफसरों के दुव्यवहार के कारण बहुत से सिख सैनिक उत्तेजित हो गए थे। उन्होंने सेनापति शेर सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों से युद्ध छेड़ दिया। प्रारम्भिक सफलताओं के बाद रामनगर की लड़ाई में वे पराजित हो गए। अंग्रेजों ने 1849 में पंजाब को पूरी तरह अपने अधिकार में ले लिया।

यहीं से दिलीप सिंह और उसकी मां, महारानी जिंदा के दुर्दिनों की गाथा प्रारम्भ हुई। उसी वर्ष दिलीप सिंह को गवर्नर जरनल लार्ड डलहौजी के आदेश से फतेहगढ़, जहां अंग्रेजी सेना की छावनी थी, भेज दिया गया और रानी जिंदा को चुनार के किले में कैद कर दिया गया। अंग्रेज अधिकारी डा. जॉन लोगिन को उसका संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

11 वर्ष का दिलीप सिंह यहां बिल्कुल अकेला था। अपने प्रदेश, भाषा, धार्मिक वातावरण और परिजनों से टूटे हुए बालक को केवल उन अंग्रेज परिवारों का ही कभी–कभी संपर्क मिलता था, जो छावनी होने के कारण वहां रहते थे। डॉ. लोगिन निरंतर उस पर ईसायत के संस्कार डाल रहा था और उसे बाइबल की कहानियां सुनाया करता था। वाल्टर ग्यूज को उसका शिक्षक बनाया गया था। तीन वर्ष तक इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने के पश्चात दिलीप सिंह ईसाई बनने पर सहमत हो गया। 8 मार्च, 1853 को फतेहगढ़ के गिरजाघर में उसे ईसाई धर्म की दीक्षा दी गई। लार्ड डलहौजी ने कलकता से उसे बाइबल की एक प्रति भेजकर उसके धर्म परिवर्तन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

अंग्रेज सरकार इस बात से सदा शंकित रहती थी कि देश के किसी भी भाग में दिलीप सिंह की उपस्थिति से पंजाब में अशांति की आग भड़क सकती है। उन्होंने उसे इंग्लैड चलने के लिए सहमत कर लिया। 19 अप्रैल, 1854 को वह इंग्लैड के लिए रवाना हो गया। वहां पहुंचने पर भी

उसे सदा निगरानी में रखा जाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहले उसे विम्बलडन नगर में रखा फिर उसके लिए रोहेम्पटन नगर में एक मकान लिया गया। यहां वह दो–तीन वर्ष रहा। आसपास के अंग्रेज परिवारों से उसके आत्मीय संबंध बन गए थे। फिर भी वह वहां के जीवन से पूरी तरह ऊब चुका था। उसने ब्रिटिश सरकार से निवेदन किया कि वह भारत वापस जाना चाहता है उसे इसकी अनुमति दी जाए। ब्रिटिश सरकार ने उसके निवेदन को अस्वीकार कर दिया। 1857 में दिलीप सिंह की आयु 19 वर्ष की हो गई थी। वयस्क हो जाने पर उसके ऊपर लगे अनेक प्रतिबंध हटा लिये गए थे और उसकी पेंशन 12000 पौंड वार्षिक से बढ़ाकर 15000 पौंड कर दी गई थी।

जिस वर्ष दिलीप सिंह फतेहगढ़ भेजा गया था, उसकी मां, रानी जिंदा को चुनार किले में नजरबंद कर दिया गया था। कुछ समय बाद जिंदा एक दासी के वेश में किले से निकलने में सफल हो गई। वह पटना होते हुए नेपाल पहुंच गई। नेपाल के राणा ने उसे शरण दी और बड़े सम्मान से रखा। किन्तु पुत्र विछोह के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। पत्र–व्यवहार आदि के जरिये दिलीप सिंह से उसका संपर्क बना रहता था। अंग्रेज सरकार ने उसे कलकत्ता आने की अनुमति दे दी। उधर दिलीप सिंह को भी अपनी मां से मिलने की अनुमति दे दी। 12 वर्ष के अंतराल के बाद मां–बेटा कलकत्ता में मिले। बेटा अपनी मां को साथ लेकर इंग्लैंड वापस आ गया। 1864 में वहीं रानी जिंदा की मृत्यु हो गई। रानी जिंदा की अंतिम इच्छा थी कि उसके अवशेषों को पंजाब की किसी नदी में बहाया जाए। ब्रिटिश सरकार ने दिलीप सिंह को भारत जाने की अनुमति तो दे दी किंतु पंजाब जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। वह अस्थियों सहित बम्बई पहुंचा और उन्हें गोदावरी नदी में प्रवाहित कर के इंग्लैड वापस चला गया।

इंग्लैण्ड वापस आते समय एलेक्जेंड्रिया (मिस्र) में उसकी भेंट एक सुंदर महिला बाम्बा से हो गई। बाम्बा का पिता मिस्टर मुलन नाम का एक जर्मन व्यक्ति था जो एलेक्जेंड्रिया का सम्पन्न व्यापारी था। बाम्बा की मां सोफिया, एक मिस्री महिला थी। एलेक्जेंड्रिया में ही दोनों का विवाह हो गया।

आगामी कुछ वर्ष दिलीप सिंह ने बड़े आमोद–प्रमोद में व्यतीत किए। पंजाब से निर्वासित करते समय ईस्ट इंडिया कम्पनी ने यह वादा किया था कि इंग्लैड में उसे जो चार लाख रुपए की पेंशन प्रतिवर्ष मिलेगी किन्तु इंग्लैड में उसे जो कुछ मिल रहा था वह बहुत कम था। वयस्क होने के पश्चात वह ब्रिटिश सरकार से मांग करता रहा कि उसे पूरी पेंशन दी जाए किन्तु उसकी इच्छा कभी पूरी नहीं हुई। 1884 में दिलीप सिंह ने अपने चचेरे भाई ठाकुर संधावालिया को इंग्लैण्ड बुलाया। वह उसी के पास ठहरा। अपने कुछ समय के प्रवास में ठाकुर सिंह ने उसे सिख धर्म की परम्पराओं का ज्ञान दिया और गुरूवाणी से परिचित कराया। ठाकुर सिंह संधावालिया ने उसके मन में यह बात भी डाली कि उसे अपना राज्य वापस लेने का प्रयास करना चाहिए।

यहां से दिलीप सिंह के जीवन का अंतिम दौर प्रारम्भ होता है। अगस्त, 1885 में जब ठाकुर सिंह संधावालिया वापस लौटने लगा तो दिलीप सिंह ने उसे हरिमंदिर (अमृतसर) में कढ़ाह प्रसाद करवाने के लिए एक हजार रुपये दिए। उसने यह निर्णय भी कर लिया कि वह इंलैण्ड छोड़कर अपने देश में लौट जाएगा और पुनः सिख धर्म स्वीकार करेगा। मार्च 1886 में वह अपनी पत्नी और 6 बच्चों सहित भारत की ओर चल दिया। उसने ठाकुर सिंह संधावालिया को एक पत्र लिखा कि वह उसे बम्बई में मिले। उसके भारत लौटने के समाचार से पंजाब में खुशी की लहर दौड़ गई और उसके स्वागत की तैयारियां होने लगी।

इस समचार से भारत की अंग्रेजी सरकार बहुत चौकन्नी हो गई। अदन बंदरगाह पर उसका जहाज रोक दिया गया और उसे इंग्लैण्ड वापस लौटने की आज्ञा दी गई। इस समय ठाकुर सिंह संधावालिया तथा अन्य चार सिंख दूसरे जहाज से अदन पहुंच गए। इन पांच प्यारों ने अदन में ही दिलीप सिंह को सिख धर्म में पुनःदीक्षित किया। इंग्लैड से चलने से पूर्व उसने अपने एक अन्य संबंधी संत सिंह को पत्र लिखकर सूचित किया था कि बम्बई पहुंचकर वह पुनः सिख धर्म ग्रहण करेगा। पंजाब की जनता के नाम भी उसने एक अपील जारी की थी।

अंग्रेज सरकार द्वारा अदन से उसके परिवार को इंग्लैण्ड वापस लौटने के लिए बाध्य कर दिया गया। किन्तु दिलीप सिंह स्वयं पेरिस आ गया। 1887 में वह रूस की सरकार से सहायता प्राप्त करने के लिए पीटर्सबर्ग भी गया। किन्तु उसके सभी प्रयास असफल रहे। पेरिस वापस लौट कर वह एक छोटे से होटल में ठहरा। होटल में ही वह पक्षाधार का शिकार हो गया और वहीं 22 अक्तूबर, 1893 को 55 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी अस्थियां इंग्लैण्ड में दफना दी गई।

दिलीप सिंह भारत के एक भू–भाग का अंतिम स्वतंत्र महाराजा था किन्तु उसका संपूर्ण जीवन विचित्र प्रकार की त्रासदियों और विडम्बनाओं से भरा हुआ था। मृत्यु से पहले वह अपने पूर्वजों के धर्म में वापस तो आ गया था किन्तु भारत में बसने की उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। यह विडम्बना ही है कि वर्ष 2010 में उसकी मूर्ति 15 करोड़ रुपए में बिकी है, जबकि मृत्यु के समय वह पूरी तरह धनहीन हो चुका था।

जातिवाद में उलझी राजनीति

HkjpUn tSu] ckM+esj

महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत ने अंहिसा की लड़ाई लड़कर अंग्रेजों की दासता से मुक्ति प्राप्त कर स्वतंत्रता हासिल की। स्वतंत्र भारत की बागडोर भारतवासियों के हाथों में सौंपी। देश में रामराज्य की कल्पना के आधार पर प्रजातांत्रिय शासन प्रणाली का शुभारंभ हुआ। जिसके आजादी के बाद सुखद परिणाम दिखाई देने लगे। जनता के हाथों, जनता की भलाई के लिये, जनहितार्थ योजनाएं बनने लगी। देश में लोकतंत्रीय ढांचे की रचना हुई। लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था को संभालने के लिये देश में विभिन्न राजनैतिक दलों का राष्ट्रीय स्तर पर गठन हुआ और जनता जनार्दन के मतदान से शासन की बागडोर बहुमत वाले राजनैतिक दल के हाथों में सौंपी गई। करीबन तीन दशक तक राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक दलों ने राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर बहुमत प्राप्त करने के आधार पर सता संभाली और राष्ट्रीय हित में जनता की सेवार्थ कार्य करना आरंभ किया। इस बीच सत्ता की लोलूपता, पद की लालसा, नेतृत्व की भूख, धनाढय बनने की जिज्ञासा, राजनैतिक लाभ उठाने की मंशा, भाई–भतीजावाद के स्वार्थ आदि के कारण राजनैतिज्ञों ने राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक दलों से अपना मोह भंग कर क्षेत्रिय स्तर के राजनैतिक दलों का गठन करना आरम्भ किया। जिसके दुष्परिणाम यह रहे कि मिली–जुली गठबंधन की लड़खड़ाती सरकारें बनने लगी। इसमें भी राजनेताओं ने अपने हित एवं स्वार्थ की पूर्ति होती नहीं देख जातिवाद के आधार पर राजनीति करने का जुगाड़ बिठा दिया। जिसके कारण अब देश की राजनीति में जतियों के बीच घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिस्पर्धा, स्वार्थ, लोभ, अहम तिरस्कार आदि अवगुणों ने घर कर लिया है जिसके कारण देश की राजनीति जातिवाद के कठघरे में उलझती जा रही है। जिसके दुष्परिणाम के रूप में जाति संघर्ष ने राजनीति को मटियामेल कर दिया है। वहां देश की आंतरिक शांति व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो रही है। देशवासियों के बीच एक दूसरे के प्रति जो मान–सम्मान, आदर–सत्कार, भईचारे की भावना थी वह आज खत्म होने के कगार पर अंतिम सांसे गिन रही है। एक जाति अपने स्वार्थ के कारण दूसरी जाति की दुश्मन बनती जा रही है। इससे देश की प्रजातंत्रीय–लोकतंत्रीय प्रणाली को गहरी आंच आने लगी है।

स्वतंत्र भारत के प्रजातंत्रीय प्रणाली में राजनैतिक दलों का बड़ा वजूद है। वहां राजनीति से जातिवाद का जहर घुलने से राजनीति के हर मंच से जातिवाद के नाम की आवाजें गूंजने लगी है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनैतिक दलों में भी अपना प्रतिनिधित्व एवं पद प्राप्त करने के लिये जातिवाद को धुरी बनाया जा रहा है। जिसके कारण राजनैतिक दलों की राजनीति में छवि खराब होने के साथ–साथ दल की राजनीति कमजोर होने लगी है। और योग्य एवं नेतृत्व संभालने वालों की कमी खलने लगी है। राजनैतिक दलों में जातिवाद के घुलने से अब राजनेता अपने जाति के हित स्वार्थों की पूर्ति में लगे रहने के कारण देश के उज्जवल भविष्य एवं विकास की तरफ ध्यान तक नहीं देते। जिसके कारण देश उन्नति की बजाय जातिवाद की घिनौनी राजनीति की चपेट में अवनति की और बढ़ता हुआ दिनों दिन कमजोर होता जा रहा है।

देश की राजनीति में जातिवाद ने बुरी तरह से पांव पसारने शुरू कर दिये है। अब तो कहीं पर सार्वजनिक भाषण हो, बैठक हो, सम्मेलन हो तो उसमें भी जाति के नाम पर बोलने, सम्मिलित होने, पद प्राप्त करने का भूत सवार होने लगा है। यदि जाति की मांग पर अवसर नहीं दिया जा रहा है तो मंच पर बखेड़ा खड़ा करना आम बात हो गई है। वहां आपसी स्नेह, प्यार, मोहब्बत, भाईचारा भी खत्म होने लगा है। राजनैतिक दलों में भी जातिवाद का बोलबाला होने से दल में प्रतिनिधित्व, पद और अवसर आने पर चुनावी टिकट की मांग भी जातिवाद के आधार पर खुलमखुला उठने लगी है। यहां तक की देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्य के मुख्यामंत्री के पद को प्राप्त करने के लिए भी जाति वाद की मांग जोर पकड़ने लगी है। इसके कारण योग्य नेतृत्व का अभाव दिखाई देने लगता है।

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सत्ता संभालने वाले राजनैतिक दल भी अब जातिवाद के चक्कर में बुरी तरह फंस कर उलझने लगे है। केन्द्र एवं राज्य में सत्ताधारी राजनैतिक दल अपने मंत्री मण्डल का गठन करता है तब गठन से पूर्व, गठन के समय एवं गठन के बाद भी जातिवाद के नाम पर मंत्री बनाने की बेसुरी आवाज राजनैतिक के गलियारे में गूजंने लगती है। केन्द्र एवं प्रदेश में शदि कोई आयोग का गठन होता है या किसी संस्था का मुखिया बनाने की बात सामने आती है तब भी जातिवाद के स्वर मुखरित होने लगते है। तब संबधित राजनैतिक दल, संस्था को अमुक जाति का कोप भाजन बनना पड़ता है। इतना ही नहीं खुलेआम अपने राजनैतिक दल, संस्था संगठन आदि की आलोचना करते उन्हें तनिक भी हिचक नहीं होती है। जाति के नाम पर रखने की उनका तनिक भी शर्म नहीं रहती। केवल अपनी जाति को प्रतिनिधित्व एवं पद की लालसा की भूख रहती है। यदि इसकी पूर्ति नहीं होती है तो अपनों के सामने अपनी जाति केलिए हड़ताल, आंदोलन, घेराव, असहयोग करने पर जातिवाद वाले सभी राजनैतिक मर्यादाओं को ताक पर रख कर संघर्ष के लिये तैसार रहते हैं।

जातिवाद का भूत इस तरह भारतीय राजनीति पर सवार हो गया है कि अपने राजनैतिक दल की रीति, नीति, नियम कानून, मर्यादाऐं, व्यवस्था, सिद्धान्त, आदर्श आदि को धत्ता बताने में तनिक भी देर नहीं लगती है। यदि किसी राजनैतिक दल ने अमुक जाति के व्यक्ति को चुनाव लड़ने के लिये टिकट दे दिया है तो दूसरी जाति जो टिकट से महरूम रहती है वह अपनी जाति के व्यक्ति को विद्रोही बनाकर अपनी पार्टी के उम्मीदवार के सामने खड़ा कर देती है। खड़ा ही नहिं करते अपितु अपने जाति के विद्रोही उम्मीदवार को टक्कर देने में किसी प्रकार की कोई कसर बाकी नहीं रखते है। इतना ही नहीं अपनी पार्टी के घोषित उम्मीदवार के सामने अपनी जाति का कोई उम्मीदवार अन्य पार्टी से खड़ा है। जिसके राजनैतिक दल के विचारों, रीति–नीतियों से आपका सदैव टकराव रहा है, आप उसके कट्टर आलोचक रहे है फिर भी अपनी जाति का उम्मीदवार खड़ा

है तो उसे विजयी बनाने में जातिवाद के अधार पर अपने सिद्धान्तों की आहुति देने में तनिक भी हिचकते नहीं है। ऐसे जातिवाद की भावना के कारण ही आजकल राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनैतिक दल कमजोर हो रहे है।

सत्ता के लिये राजनैतिक दलों के सिद्धान्तों, असूलों को जातिवाद के नाम बलि चढ़ाने वाले अपनी जाति भावना के सदैव कायल रहते हैं। सत्ता के अतिरिक्त राजनैतिक संगठन में अपनी टांग अड़ाई से बाज नहीं आते हैं। राजनैतिक संगठन में संगठन के मुखिया, मंत्री, कार्यकारिणी सदस्य बनने की अपनी जाति का प्रतिनिधित्व के लिये अड़ते ही नहीं अपितु अडंगेबाजी लगाकर संगठन को बदनाम व कमजोर करने में तनिक भी हिचकिचाहट, शर्म तक महसूस नहीं करते हैं। चुनाव के समय संगठन में जातिवाद के आधार पर अपनी जाति के उम्मीदवार के लिये टिकट मांगते हैं। यदि किसी क्षेत्र में अमुक जाति का बाहुल्य है तो वहां से उस जाति के उम्मीदवार को टिकट दिलाने की मांग पर जोर देते है। भले ही वह व्यक्ति हार जाये उसकी इनको तनिक भी परवाह नहीं है। इन्हें तो अपनी जाति का उम्मीदवार चाहिये। ऐसा जातिवाद में उलझा राजनीति दल अपना बहुमत नहीं बन पाया है और सत्ता के निकट नहीं पहुंचता है। पिछले दो दशक से देश की राजनीति जातिवाद में उलझकर रह गई है।

भारतीय राजनीति में जातिवाद का जहर इस तरह घुल गया है कि अब इसे मिटाना सहज काम नहीं है। अब तो जातियों के आधार पर राजनैतिक दलों का गठन होने लगा है। भले ही ऐसे राजनैतिक दल अपने बल पर सत्ता हथियाने में कायम नहीं हो परन्तु अन्य राजनैतिक दलों को इनके सहारे से सत्ता बनाने में सहारा लेना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में जातियों के आधार पर गठित राजनैतिक दल अपना राजनीति अस्तित्व बना देता है। इस कारण भी देश में जातिवाद के नाम पर जातियों राजनैतिक लाभ उठाने में रहती है। राजनीति पटल पर जातिवाद इतना हावी हो गया है कि इसके मंच से अब तो देश की प्रशासनिक व्यवस्था के साथ–साथ अन्य सेवा श्रेणियों में भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है। जिसके कारण योग्य, दक्ष, प्रतिभाशाली, व्यक्तित्व भी जातिवाद के आगे घुटने टेक देते हैं। इससे देश की प्रतिभाऐं कोसों दूर रह जाती है और देश होने वाली तरक्की अवरूद्ध होने लगी हैं।

देश की राजनीति में जातिवाद बुरी तरह से घुस गया है। यदि समय रहते राजनीति में जातिवाद को उखाड़ कर बाहर नहीं किया गया तो देश की राजनीति में राजनीति छिन्न–भिन्न हुए बिना नहीं रहेगी और राजनीति में राजनैतिकों की छवी भी खराब ही रहेगी। इसलिये भारतीय राजनीति में जातिवाद को हटाने के लिये सर्वप्रथम आरक्षण के कैंसर को दूर करना होगा। देश में केवल राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक दल को मान्यता देनी होगी । क्षेत्रीय एवं जातियों के आधार पर बनाये जाने वाले राजनैतिक दलों का राजनीति में प्रवेश बंद करना होगा। जातिवाद के आधार पर राजनीति करने वाले राजनेताओं को संबधित राजनैतिक स्तर पर जातियों के नाम पर दी जाने वाली सुविधाओं पर लगाम लगानी होगी। राजनीति को आधार मानकर गठित की जाने वाली विभिन्न प्रकार की संस्थाओं को बंद करना होगा। राजनीति में जातिवाद हटाते ही देश में समृद्ध, खुशहाली, शान्ति स्वतः ही पनपने लगेगी।

मित्रता का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। कोई भी व्यक्ति अकेले नहीं रह सकता, क्योंकि अकेला रहना एक बहुत बड़ी साधना है। जो समाज या परिवार में रहते हैं वे इसलिए रहते हैं कि उन्हें एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता होती है। परिवार का अर्थ ही है माता–पिता, दादा–दादी, चाचा–चाची, भाई–बहन का समूह। इन्हीं से परिवार बनता है और कई परिवारों के मेल से समाज बनता है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से शहर, राज्य और राष्ट्र बनता है। इसलिए जो भी व्यक्ति समाज में रहता है, वह एक–दूसरे से जुड़ा रहता है। मित्रता मनुष्य के जीवन की एक अद्भूत उपलब्धि है। जिस व्यक्ति के मित्रों की जितनी अधिक संख्या होती है, वह उतना बड़ा आदमी होता है। मनुष्य धन से बड़ा नहीं होता, मित्रों और शुभचिंतकों से बड़ा होता है। जो व्यक्ति समाज में जितना अधिक लोकप्रिय होता है उस व्यक्ति को ही लोग आदर और सम्मान की नजर से देखते हैं, लेकिन ध्यान रखना चाहिए कि गलत लोगों से मित्रता न हो। जो झूठी प्रशंसा करने वाले हों, चाटूकार हों, किसी प्रलोभन में पड़कर मित्रता करना चाहते हों। उनसे दूर रहना चाहिए। मित्र का अर्थ है, जो व्यक्ति हमें सुख–दुख में साथ दे। अगर कोई व्यक्ति सुख में साथ दे और किसी संकट में धोखा दे तो ऐसा व्यक्ति मित्र नहीं शत्रु होता है।

जब मनुष्य किसी संकट में पड़े और उस समय जो सहायता करे, वही सच्चा मित्र है। वे लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें सच्चा मित्र मिल जाता है। आजकल गलत मित्रों की संख्या बढ़ गई है, जो किसी स्वार्थ में पड़कर, कोई लाभ उठाने के लिए मित्रता कर रहा है या सही अर्थ में मित्र बनाना चाहता है। जब तक इसकी पूरी पहचान न हो जाए, तब तक कभी भी किसी नए व्यकित से मित्रता नहीं करनी चाहिए और न किसी नए व्यक्ति को अपने मन की बात करनी चाहिए। सोच–समझकर अगर मित्रता की जाए तो वह मित्रता सफल रहती है। एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि मित्रता बराबर वालों में होनी चाहिये। बहुत धनी और निर्धन के बीच मित्रता नहीं होती। दोस्ती और शत्रुता हमेशा बराबर वालों से ही की जाती है।

चौधरी चरणसिंह

&&Mk- uRFku flg

जिस व्यक्ति को अपने देश के साथ लगाव है, जो इस देश की जनता की बहबूदी में रुचि रखता है और जो भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति आस्थावान है, उसका मस्तिष्क चौ. चरणसिंह के नाम के सामने अवश्य झुक जायेगा।

चौ. चरणसिंह के विषय में, जानने के लिए, यह बिल्कुल आवश्यक नहीं कि वे कहां पैदा हुए थे, उनके पूर्वज (नूरपुज जानी) कहां से चलकर आए थे, पिता भीम सिंह के कितने भाई थे, उनके परिवार के पास कितनी जमीन थी, बचपन में चौधरी साहब कहां–कहां पढ़े थे और कहां से उच्च शिक्षा अर्जित की थी, केवल यह जानना आवश्यक है कि वे छात्र–जीवन में गांधी जी से प्रभावित हुए क्रांतिकारियों के त्याग, बलिदान और उत्कृष्ट देशभक्ति से अभिभूत हुए, महर्षि दयानन्द की प्रगतिशील, धार्मिक विचारधारा को आचरण के रूप में अपनाते गए, सरकारी साधनों के व्यक्तिगत प्रयोग के कट्टर दुश्मन रहे, सरकारी विभागों में खर्च की कमी को व्यवहारिक रूप देते रहे, पूंजीपतियों से चंदा लेने के पक्ष में कभी नहीं रहे, मार्क्सवादी न होते हुए भी मार्क्स के इस कथन के समर्थक रहे कि पूंजी के साथ प्रभाव भी ग्रहण करना पड़ता है, अतः चुनाव प्रचार के लिए, धन का अभाव होते हुए भी, मिल मालिकों से चंदा लेने के विरोधी रहे, सिम्पिल लिविंग और हाई थिंकिंग के साक्षात् अवतार गश्हमंत्री के बंगले में भी, एक कमरे में कालीन बिछाकर बैठने तथा सामने छोटी मेज रखकर लिखने के अभ्यस्त थे चौधरी साहब।

इस साधारण रहन–सहन के पीछे क्या विचार तथा उद्देश्य निहित था, यह जानना प्रत्येक देशभक्त के लिए आवश्यक है। वे भली प्रकार जानते थे कि जब तक शब्दों के पीछे कार्य या आचरण का बल नहीं होता, तब तक व्यक्ति के कथन का कोई प्रभाव नहीं होता। यही कारण है कि बचपन से ही उन्होंने स्वयं को कथन और कर्म की एकता तथा आचरण और सिद्धांत की एकरूपता के लिए तैयार किया था। इस सिद्धांत पर, वह अंत तक टिके रहे। उनके जीवन में अनेक तूफान आए, अनेक उत्थान तथा पतन के झंझावत आए, पर वह हमेशा हिमालय की तरह अचल रहे। वह टूटे इसलिए नहीं कि उनको जनता का बल प्राप्त था।

चौ. चरणसिंह एक गरीब किसान की संतान थे, अतः किसानों और गरीबों से उनका बेहद लगाव रहा है। उनको जब कभी मौका हाथ लगा, तभी किसानों के हितों के काम करने पर जुट गए। सबसे पहला अवसर उनको प्राप्त हुआ सन् 1928 में, जब आप गाजियाबाद में वकालत कर रहे थे। किसानों के मुकदमों में फैसले कराना, उनको लड़ाने के लिए प्रेरणा न देना और उनके झगड़ों को आपसी बातचीत से सुलझा देना आदि उनका किसान हित की दिशा में पहला कदम था। यही कार्य चौ. छोटूराम ने पंजाब में करके किसानों को समश्द्ध बनाया था।

किसान–हित–सम्पादन का दूसरा अवसर आपको तब मिला, जब आप मेरठ जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष रहे थे। उस समय ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों तथा स्कूलों की हालत ठीक कराई, अनुचित भत्ता लेने वाली प्रवशति को हतोत्साहित किया, कार्यालय के बाबुओं को समय पर आने के लिए विवश किया और चपरासियों से निजी काम लेने की आदत को छुड़ाया। सारांश यह है कि इस काम में किसान तथा आम आदमी का भला करना, कार्यप्रणाली में ईमानदारी तथा निष्ठा–भावना का समावेश करना आपके दो विशेष गुण रहे हैं, जिनके लिए आप हमेशा याद किये जायेंगे।

किसान तथा गरीबों की भलाई करने का तीसरा अवसर आपको उस समय मिला, जब आप गाजियाबाद, बागपत क्षेत्र से प्रांतीय धारा–सभा के लिए सन् 1937 में चुने गए। सन् 1939 में आपने ऋण–विमोचन विधेयक पास कराया, जिससे किसानों के खेतों की नीलामी बच गई और सरकार के ऋण से किसानों को मुक्ति मिली। बाद में चौ. सर छोटूराम ने, पंजाब में ऐसा ही कानून बना कर लाखों किसानों को लाभ पहुंचाया। सन् 1939 में आपने किसान–संतान को सरकारी नौकरियों में पचास फीसदी आरक्षण दिलाने के पक्ष में लेख लिखा, कांग्रेस दल की बैठकों में प्रस्ताव रखा, लेकिन तथाकथित राष्ट्रवादी कांग्रेसियों के विरोध के कारण, इस उद्देश्य में सफलता नहीं मिली। किंतु, इस दिशा में उनकी असफलता भी, उनकी जीत थी। इससे यही सिद्ध होता है कि वह निरंतर किसानों के हित में सोचते थे। उनका आर्थिक–दर्शन इस बात का ज्वलंत प्रमाण है।

सन् 1939 में ही, आपने कांग्रेस–विधायक दल के सामने एक प्रस्ताव रखा था कि सरकारी नौकरी के लिए साक्षात्कार के हिन्दू उम्मीदवारों से जाति न पूछी जाए, केवल यह पूछा जाए कि वह अनुसूचित जाति का है अथवा नहीं? आपका यह कार्य, इस बात का प्रतीक है कि आप हरिजन तथा अनुसूचित जाति के लोगों की तरक्की के प्रश्न पर केवल सैद्धांतिक दशष्टि से ही नहीं, वरन् व्यवहारिक स्तर पर सोचते रहे। हिन्दूओं से ऊंच–नीच के भेद को मिटाने के उद्देश्य से, आपने पं. नेहरू को पत्र लिखे थे और इसकी व्यवस्था करने का आग्रह किया था कि सरकारी सेवाओं में प्रवेश की एक शर्त हरिजन कन्या से विवाह करना लगाई जाए।

उत्तर प्रदेश के किसानों को इजाफा–लगान तथा बेदखली के अभिशाप से मुक्त करने के लिए सन् 1939 में ही आपने 'भूमि उपयोग बिल' का मसौदा तैयार किया। धारा–सभा के सदस्यों में उसे वितरित कराया, सभा में पेश करने का नोटिस भी दिया गया, लेकिन वांछित उद्देश्य की प्राप्ति सन् 1939 में न होकर सन् 1942 में हुई जब आप 'जमींदारी उन्मूलन अधि ानियम' पास कराने में सफल हुए थे। जमींदारी उन्मूलन से उत्तर प्रदेश के किसानों को कल्पनातीत लाभ हुआ।

उन्होंने उत्तर प्रदेश में कृषि, परिवहन; वित्त, गश्ह, सिंचाई तथा बिजली, न्याय तथा सूचना, पशुपालन, वन, स्वायत्त शासन, माल आदि विभागों के मंत्री तथा मुख्यमंत्री के रूप में लोकहित के अनेक ऐसे कार्य किये, नैतिक आचरण के अनेक ऐसे उदाहरण पेश किये, ईमानदारी तथा प्रशासनिक कौशल के बहुत से ऐसे कार्य किये, जिनके लिए उनको इतिहास के पश्ष्ठों पर हमेशा याद रखा जायेगा।

जब कभी, छात्र–समाज में अनुशासनहीनता को बिना लाठी गोली के मिटाने का सवाल किसी प्रशासक के सामने उठेगा, तब चौधरी साहब को याद किया जायेगा, जब कभी जाति तथा संप्रदाय के आधार पर शिक्षा संस्थाओं में नामों को मिटाने की बात उठेगी तो आपको ही याद किया जायेगा, जब कभी सरकारी अधिकारियों से रिश्वतखोरी मिटाने का सवाल उठेगा, जब कभी प्रशासन में कमखर्ची और कुशलता लाने की समस्या सामने आयेगी, जब कभी सरकार के सामने देश से गरीबी तथा बेकारी, मिटाने की गंभीर समस्या पैदा होगी, तब इनके हल के लिए चौधरी साहब के व्यक्तित्व, चिंतन की दिशा और नीति की ओर देखना पड़ेगा, इसके बिना समस्याओं के समाधान नहीं खोजे जा सकते।

आज लोगों को इस कथन में अत्युक्ति दिखाई पड़ सकती है कि चौधरी चरणसिंह की आर्थिक नीतियों की अवेहलना करके इस देश का पूंजीवादी विकास तो संभव है, किन्तु समाजवादी विकास संभव नहीं है।

चौधरी साहब कोरे राजनीतिज्ञ नहीं थे, वे सिद्धांतवादी भी थे और उदात्त मानवीय मूल्यों के साथ प्रतिबद्ध भी। यदि वे केवल राजनीतिज्ञ होते तो एक बार मुख्यमंत्री बनने के बाद आजीवन उस आसन पर बने रहते अथवा प्रधानमंत्री होने के बाद, उस आसन को हाथ से न जाने देते। राजनीतिज्ञ पहले अपना हित देखता है, बाद में राष्ट्र या समाज का, किन्तु आदर्शवादी पहले राष्ट्र और समाज का हित देखता है और अपने हितों को उन पर न्योछावर कर देता है। चौधरी साहब ने हमेशा इस देश के गरीबों के लिए अपने हितों को ठोकर मारी है। यही कारण है कि सत्ता तथा पूंजीतंत्र ने सदैव उनको ध ाराशायी करने का प्रयास किया किन्तु जनता ने उनको अनन्य सम्मान और श्रद्धा समर्पित की।

चौधरी साहब को ग्रामीण क्षेत्र और ग्रामीण जनता से विशेष लगाव था। आज के युग में, भारत का ग्रामीण अंचल परस्पर द्वेष तथा संघर्ष से ग्रसित है, अशिक्षा तथा अनैतिक कार्यों की ओर अन्मुख होता जा रहा है, यहां वर्तमान शिक्षा संस्थाएं छात्रों को कम्पटीटिव परीक्षाओं में सफल होने के योग्य न बना कर, उनको निम्न श्रेणी का नागरिक बना रही है, एक प्रकार की शिथिलता तथा दायित्वहीनता से ग्रामीण–तंत्र आक्रांत है। अतः आवश्यकता है कि हमारे समाज में चौ. चरणसिंह जी जैसे निष्ठावान व्यक्ति पैदा हों। किसानों की समश्द्धि का जो कार्य उन्होंने प्रारंभ किया था, उसको पूर्णता की ओर ले जायें।

मेरा दश्ढ़ विश्वास है कि समाज और राष्ट्रों का निर्माण राजनीतिज्ञों से नहीं होता। यह कार्य पूरा होता है निष्ठावान् विचारकों के आदर्श आचरणों से।

आज के युग की आवश्यकता निष्ठावान् नागरिक पैदा करने की है। आइए, हम सब लोग निष्ठावान् समाज सापेक्ष और कर्तव्यपरायण नागरिक पैदा करने पर जुट जायें और ग्रामीण अंचल की शिक्षा–संस्थाओं को इस शिक्षा की ओर मोड़ दें।

''आजाद हिन्द फौज के महान स्वतंत्रता सैनानी जाबांज शेर-ए-हिन्द कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत *INA* की संक्षिप्त गौरवगाथा''

& lekt lsoh ekLVj pkanfla vgykor

thou ifjp; %& कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत का जीवन गौभक्ति, दानी, त्यागी, तपस्या, सेवा, खेल, राष्ट्रभक्ति और संघर्ष की लंबी कहानी है। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो गांव के साधारण किसान पविवार में जन्मा ना विदेश में कैम्ब्रिज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ा, न कोई धन्ना सेठ–साहूकार का सहारा लिया, न कोई राजनैतिक सहारा फिर भी अपनी कड़ी मेहनत, लग्न, वफादारी, त्याग, तपस्या व ईमानदारी के बल पर उन ऊँचाईयों पर जा पहुंचे जिन तक साधन सम्पन्न घराने के बड़े लोग भी नहीं पहुंच पाते हैं। साहस–वीरता व बलिदान के प्रतीक और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निकट सहयोगी हरियाणावासियों के प्रेरणास्त्रोत महान् स्वतंत्रता सेनानी शेर–ए–हिन्द कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत की संक्षिप्त गौरवगाथा।

tUe %& कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत का जन्म 8 नवम्बर सन् 1911 को गांव डीघल जिला झज्जर, हरियाणा के जाट किसान परिवार में हुआ। आपके पिता चौ० अमीलाल इलाके के मशहूर आर्यसमाजी थे।

f'k{kk %& आपने गांव डीघल में प्राईमरी, गांव बेरी में छटी से आठवीं और जाट हाई स्कूल, रोहतक में 9वीं व दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की। आप शिक्षा में अपनी कक्षा में सदैव प्रथम रहते थे।

[ksy miyfC/k;ka %& आपको हॉकी खेलने का बड़ा जुनून था। खेल की बदौलत आप बेरी स्कूल हॉकी टीम के कप्तान चुने गये। आप जाट हाई स्कूल रोहतक हॉकी टीम के कप्तान रहे। आपकी मशहूरी जाट सैन्टर बरेली तक फैल गई। जाट सैन्टर बरेली के अंग्रेज कमांडिंग अफसर जाट सैन्टर बरेली की हॉकी टीम के साथ जाट हाई स्कूल रोहतक की टीम से हॉकी मैच खिलाने के लिए रोहतक आये। जाट स्कूल हॉकी टीम के कप्तान हरद्वारी सिंह अहलावत के नेतृत्व में जाट हाई स्कूल की टीम ने जाट सैन्टर बरेली की टीम को बुरी तरह हराया। उसी वक्त जाट सैन्टर बरेली के ब्रिटिश अफसर ने हरद्वारी सिंह के खेल पर फिदा होकर दिनांक 8 नवम्बर सन् 1927 को केवल 16 वर्ष की आयु में कैप्टन हरद्वारी सिंह को ब्रिटिश आर्मी में भर्ती कर लिया। उस समय आप दंसवी कक्षा में पढ़ रहे थे। शानदार हॉकी खेल की बदौलत आपको जाट सैन्टर बरेली हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया। कड़ी मेहनत व उत्कृष्ट खेल के कारण आपने सेना की हॉकी टीम में स्थान बना लिया। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी खेल उपलब्धियों के कारण सन् 1932 में जाट सैन्टर बरेली के भव्य समारोह में जाट ब्रिगेड के ब्रिटिश जनरल ने आपको जाट रेजिमेंट का सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ी का मैडल देकर सम्मानित किया तथा आपको सिपाही से हवलदार के पद पर पदोन्नत किया। सन् 1934 में आपने प्रथम पश्चिमी एश्यिाई हॉकी प्रतियोगिता में भारतीय टीम की और से भाग लिया और भारतीय टीम विजय रही। आपको सीनियर ब्रिटिश अफसर ने जाट सैन्टर बरेली में सम्मानित किया। सन् 1935 में न्यूजीलैंड भ्रमण के साथ लंका, ऑस्ट्रेलिया में 48 मैच खेले। उसके बाद भारतीय टीम ने मेलबोर्न, सिडनी, बैलिंगटन, आकलैण्ड में टैस्ट मैच खेले और सभी में भारतीय टीम विजय रही। कैटी में भारतीय टीम का माओरिओ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। सन् 1936 में आपने बर्लिन ओलम्पिक में भाग लिया और टीम विश्व विजेता बनी। जर्मनी में टीम का भव्य स्वागत किया गया। बर्लिन ओलम्पिक के संयोजक अध्यक्ष डॉ. डीम और जर्मनी हॉकी के अध्यक्ष श्री हरएक्स ने अधिकारिक रूप से टीम का स्वागत किया। टीम के स्वदेश लौटने पर टीम का जगह–जगह भारी स्वागत किया गया। आपको जाट सैन्टर बरेली, पंजाब सरकार, केन्द्रीय सरकार, जाट हाई स्कूल रोहतक, अहलावत खाप–27 आदि अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया। आपको जाट सैन्टर बरेली के भव्य समारोह में जाट ब्रिगेड के ब्रिटिश जनरल ने आपको हवलदार से *J.C.O.* प्रमोट किया। आप हॉकी के इलावा तैराकी व निशानेबाजी के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी थे। सन् 1943 की सिंगापुर परेड़ में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने राईफल व पिस्टल शूटिंग मुकाबलों में दोनों में प्रथम स्थान पाने व आपको श्रेष्ठ निशानेबाज का पदक देकर सम्मानित किया था।

lsuk esa HkrhZ %& आपको दिनांक 8 नवम्बर, 1927 को 2/9 जाट रेजिमेंट में भर्ती किया गया। बेसिक लिखित परीक्षा हो या फिर शारीरिक मुकाबले की ट्रेनिंग कैम्प में आपका अपना जलवा होता था। आपको 2/9 जाट रेजिमेंट का बैस्ट फौजी होने का मैडल मिला। आपको जाट सैन्टर बरेली में ट्रेनिंग इंस्ट्रेक्टर नियुक्त किया गया। आपका ब्रिटिश अफसरों पर अच्छा प्रभाव होने के कारण आपने गांव डीघल व इलाके के सैंकडों नौजवानों को ब्रिटिश आर्मी की 2/9 जाट रेजिमेंट में भर्ती करवाया।

fookg %& कैप्टन हरद्वारी सिंह का विवाह दिनांक 8 नवम्बर 1932 को गांव बादली जिला झज्जर हरियाणा के चौ. रामसिंह गुलिया की बेटी कमला देवी से सम्पन्न हुआ। कमला देवी से पांच संतानें हुई जिनमें 3 लड़के और 2 लड़कियां हुई जो क्रमशः चौ. महताब सिंह, मा. चाँद सिंह, श्री रघबीर सिंह, लड़कियां राज देवी व चाँद कौर।

f}rh; fo'o ;q) esa Hkkxhnkjh %& सन् 1939 के द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने भारतीय फौजियों को युद्ध की भट्ठी में झोंक दिया। बहुत लोग शहीद हुए जिसमें गांव डीघल, बेरी, गोच्छी, दुबलधन, सांपला, महम, छारा, मण्डौठी, बादली, रोहतक, झज्जर, कोसली, रेवाड़ी, भिवानी, दादरी, जीन्द, सोनीपत, हांसी, हिसार, महेन्द्रगढ़, नारनौल आदि के काफी लोग शहीद हुए। आपको सन् 1941 में अपनी यूनिट के साथ मलाया, सिंगापुर भेज दिया गया। दिसम्बर 1941 में मलाया सिंगापुर में जापान के खिलाफ अंग्रेजों की लड़ाई हुई। बहुत ही घमासान युद्ध हुआ जिसमें बटालियन के 400 के लगभग अफसर व सैनिक मारे गए अंग्रेज हार गये। 15 फरवरी सन् 1942 को अंग्रेजी फौज ने जापानी फौज के सामने हथियार डाल दिये और जापान के युद्ध कैदी हो गये। कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत ने 15 फरवरी 1942 को स्वेच्छा से अपनी

समूची बटालियन के साथ हिन्दुस्तान को आजाद करवाने के लिए *INA* में शामिल हो गये, उस वक्त जनरल मोहन सिंह ने इन युद्ध कैदियों से *INA* बनाई और ट्रेनिंग इत्यादी दी। दिनांक 2 जुलाई 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने *INA* का नेतृत्व करने के लिए जर्मनी से टोकियो जापान होते हुए सिंगापुर पंहुचे। श्री रासबिहारी बोस ने *INA* की कमाण्ड नेताजी को सौंप दी। उसके बाद *INA* की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई।

आपकी मशहूरी एवं योग्यता को देखकर नेताजी ने आपको अपने पर्सनल स्टॉफ में अपना *P.S.O* कम *A.D.C* नियुक्त किया। आप नेताजी के साथ सिंगापुर, मलाया, बर्मा, जावा, सुमाट्रा, फिलिपंस, जर्मनी जापान आदि देशों में गए। सिंगापुर में आयोजित अफसरों व जवानों के राईफल व पिस्टल शूटिंग निशानेबाजी मुकाबलों में आपने दोनों ही मुकाबलों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्रेष्ठ निशानेबाज, निडर व युद्धशैली की पूर्ण योग्यता और कुशल नेतृत्व की क्षमता से प्रभावित होकर जनरल शाहनवाज खान ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से कैप्टन हरद्वारी अहलावात को अपनी रेजिमेंट में शामिल करने का अनुरोध किया। नेताजी ने जनरल शाहनवाज खान के अनुरोध को स्वीकार करते हुए कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत के नेताजी ने पीठ थपथपाई और हिन्दुस्तान की जमीन से अंग्रेजों को मार भगाने के लिए बर्मा मोर्चे पर भेज दिया। कैप्टन हरद्वारी सिंह ने नेताजी को जयहिन्द कहते हुए सैल्यूट किया और विदाई ली। जनरल शाहनवाज खान ने आपको गौरिला ब्रिगेड की 5*th* बटालियन की ''ए'' कम्पनी कमाण्डर की हैसियत से फ्रंट पर भेज दिया।

हिन्दुस्तान और बर्मा बॉर्डर के नजदीक लेजिपोपा हिल्ज एरिया आदि में कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत की ''ए'' कम्पनी ने जबरदस्त लड़ाई लड़ी और शत्रु का भारी नुकसान किया। कर्नल सहगल के साथ अटैच जापानी अफसर ने अपनी आंखों से आपकी लड़ाई देखी। उन्होंने आपकी बहादुरी की प्रशंसा की और जनरल शाहनवाज खान को टेलीफोन से सारा हाल बताया। जापानी अफसर ने आपके युद्ध कौशल व टैकटिस की भूरि–भूरि प्रंशसा करते हुए कहा कि आपके कैप्टन ने हमारे जापानी अफसरों को भी मात दे दी है। जापानी सीनियर अफसर ने नेताजी को यहां तक कहा कि कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत जैसे गौरिला युद्ध होते हुए अंग्रेजों की हार निश्चित है।

ÝV 2 \& हाका फलम जहां घने जंगल और पहाड़ी इलाका है। 7–8 हजार फीट ऊंची पहाड़ी पर ब्रिटिश सेना की चौकी है जो बहुत खतरनाक ऊंचे पहाड़ों पर बनी अंग्रेजों की सुरक्षित चौकी है। पहाड़ी पर 500 ब्रिटिश सैनिकों के रहने की पक्की बैरक बनी हुई थी और ब्रिटिश झंडा फहरा रहा था। हाका और फलम के फ्रंट पर ब्रिटिश फौज ने जापानियों और हिन्दुस्तानी फौज के नाक में दम कर रखा था। जापानियों व हिन्दुस्तानियों ने ऊंची चोटी पर बनी ब्रिटिश चौकी पर अनेक बार हमले किये परन्तु कब्जा नहीं कर सके।

उस खतरनाक एवं सुरक्षित चौकी पर कब्जा करने का दायित्व कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत को सौंपा गया। कैप्टन हरद्वारी सिंह ने 2 दिन तक गुप्त रूप में स्वंय पहाड़ी पर चढ़कर जायजा लिया । इस पहाड़ी के पश्चिम व दक्षिण में नदी बहती थी जहां सीधी खड़ी पहाड़ी होने के कारण पहाड़ी पर चढ़ने का कोई रास्ता नहीं था बाकि उत्तर पूर्व की दो साईड की पहाड़ी गहरी घने जंगल 100 फूट भारी–भरकम ऊंचे चीढ़ के पेड़ों से घिरी हुई थी। नीचे से पहाड़ी पर चढ़कर चौकी पर कब्जा करना टेढ़ी खीर थी। कैप्टन साहब ने चौकी पर हमला करने का एक अद्भूत और निराला प्लान बनाया और सैनिकों को समझाया कि 200 सैनिक पहाड़ी की चोटी से लगभग 100 गज नीचे 20–20 गज की दूरी बनाकर पेड़ों की आड़ में छिपकर पहाड़ी के दोनों तरफ अपने–अपने हथियारों के साथ मोर्चा संभालेंगे और सुबह ठीक 4 बजे अंधेरे में पहाड़ी की चोटी पर फायर करेंगे और दुश्मन के ब्रिटिश सैनिक पहाड़ी के ऊपर से आप पर फायर करेंगें परन्तु अगले आदेश तक कोई भी सैनिक आगे नहीं बढ़ेगा। बाकी 100 सैनिक पहाड़ी के दोनों तरफ खड़े चीढ़ के मोटे व लम्बे पेड़ों पर अपने हथियारों व गोला–बारूद सहित 20–20 गज की दमरी बनाते हुए पेड़ों पर चढ़कर और पेड़ों की आड़ लेकर मोर्चा बनाएंगे और बन्दूकों का निशाना पहाड़ी पर लेटे ब्रिटिश सैनिकों की तरफ रखेंगे। नीचे खड़े नीचे खड़े सैनिकों द्वारा ठीक 4 बजे हमला करने पर अंग्रेज बैरक से बाहर निकालकर पहाड़ी के किनारों पर आकर पहाड़ी के नीचे जवाबी हमला करेंगे। फायर का यह सिलसिला आधा घंटा जारी रहेगा। और ठीक 4:30 बजे पेड़ों पर चढ़े सैनिक पेड़ों के ऊपर से पहाड़ी के किनारों पर लेट या खड़े अंग्रेज सैनिकों पर मशीनगनों व राईफलों से अंधाधुध गोलियां बरसायेगें जब तक दिन का उजाला होगा और स्थिति साफ होगी। इसमें कोई चूक न हो सभी समय पर ही हमला करेंगे। *INA* के जाबांज सैनिकों के आदेश के अनुसार ठीक समय पर हमला किया। मशीनगनों आदि से अचानक गोलियों की बारिश से पहाड़ी पर लेटे या खड़े अंग्रेज सैनिक कुछ समझ नहीं पाये और ना ही उन्हें भागने का मौका मिला वहीं पर लाशों के ढ़ेर लग गये। दिन का उजाला होने पर कैप्टन साहब ने अपनी दूरबीन से पहाड़ी के चारों और देखा और जायजा लिया तो देखा कि अंग्रेज सैनिक की लाशें बिछी पड़ी हैं और कुछ जख्मी पड़े हुए दर्द से चिल्ला रहे हैं। बाकि अंग्रेज सैनिक अपनी जान बचाकर बैरक में छिप गए। कैप्टन साहब ने फायर बंद करवाई और अंग्रेजों से कहा कि तुम्हें 5000 सैनिकों ने चारों तरफ से घेर रखा है जान बचाना चाहते हो तो बैरक से बाहर आकर हथियार डाल दो और सरेंडर कर दो। *INA* के सैनिकों ने नेताजी की जय, भारतमाता की जय के बुलन्द नारे बड़े जोर–शोर से लगाने लगे। भारतीय सैनिकों के जयघोष व भारी संख्या से घबराकर अंग्रेज सैनिक अपने हथियार सहित बैरक से बाहर आये और हथियार डालकर सरेंडर कर दिया। कैप्टन साहब पेड़ से नीचे उतरे और पेड़ के नीचे खड़े सैनिकों को आगे बढ़कर ब्रिटिश सैनिकों को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया। अंग्रेज सैनिक कभी नीचे वाले *INA* के सैनिकों पर अचानक हमला न कर दे इसलिए पेड़ पर चढ़े हुए *INA* के सैनिकों ने अपनी मशीनगनों का मुख/निशाना सरेंडर करने वाले ब्रिटिश सैनिकों की और कर दिया। इस हमले में 350 के लगभग अंग्रेज सैनिक मारे गये और कुछ कैम्प छोड़कर अपनी जान बचाकर भाग गये और कुछ नदी में कूद गये। उनका अंग्रेज कमाण्डर केवल सफेद कच्छे में ही भाग गया। कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत ने 150 अंग्रेज सैनिकों को उनके हथियारों सहित गिरफ्तार कर उन्हीं के बैरक में बंद कर उन्हें कैद कर लिया तथा उनका भारी मात्रा में राशन तथा जमा गोला–बारूद, हथियारों सहित जब्त कर

लिया।

कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत ने चौकी से ब्रिटिश झण्डा यूनियन जैक उतारकर भारतीय तिरंगा झण्डा फहरा दिया। उस समय एक जख्मी पड़े अंग्रेज सैनिक ने कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत पर अचानक पिस्टल से गोली चला दी जो कैप्टन साहब की जांघ को रगड़ती हुई निकल गई। कैप्टन हरद्वारी सिंह बाल–बाल बचे तुरन्त *INA* सैनिकों ने उस अंग्रेज को गोलियों से भून दिया। इस लड़ाई में हमारा कोई भी जानी नुकसान नहीं हुआ। बिना किसी जानी नुकसान के इस युद्ध टैकटिन के साथ इतनी ऊंची पहाड़ी की चौकी पर कब्जा करने का यह विश्व रिकॉर्ड है। चौकी पर कब्जा करने व तिरंगा फहराने की खबर जब जनरल शाहनवाज खान व मेजर रणसिंह को दी वह झूम उठे और उन्होंने नेताजी को बताया। नेताजी बहुत खुश हुए। इस बहादुरी के लिए नेताजी ने कैप्टन हरद्वारी सिंह की प्रंशसा करते हुए उन्हें *INA* का सर्वोच्च बहादुरी का शेर–ए–हिन्द की उपाधि का पुरस्कार स्वयं अपने हाथों से देकर सम्मानित किया।

कैप्टन हरद्वारी सिंह की गौरिला युद्ध कलां एवं अनोखी टैकटिन/प्लानिंग एवं कुशल नेतृत्व व बहादुरी दुर–दुर तक प्रंशसा हुई जो चौकी जापानी नहीं ले सके उस चौंकी पर *INA* के जाबांज सैनिकों ने कब्जा कर दिखाया। इस जापानी सैनिक, अफसर व जनरल आश्चर्यचकित हो गये। जनरल शाहनवाज खान, मेजर रणसिंह सहित भारतीय व जापानी अफसरों ने कैप्टन हरद्वारी सिंह को बधाई दी। इस युद्ध में भाग लेने वाले कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत की कंपनी के सैनिक हरियाणा व पंजाब के जाट थे।

ÝV 3 %& रानी झांसी रेजिमेंट ब्रिटिश सेना के घेरे में आ गई थी। नेताजी को भारी चिंता हुई कि अंग्रेज हमारे कैदियों के साथ भारी अत्याचार करते हैं। नजरल शाहनवाज खान से विचार–विमर्श करने लगे। जनरल शाहनवाज खान ने नेताजी को सुझाव दिया कि *5th* गौरिला 'ए' कंपनी कमाण्डर कैप्टन हरद्वारी सिंह एक वीर, जाबांज, युद्ध कौशल में पारंगत, बड़ा चतुर अफसर है। कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत की बहादुरी की चर्चा सभी की जुबान पर चढ़ी हुई थी। नेताजी ने बिना देरी किए जनरल शाहनवाज खान को हरी झंडी दे दी और नेताजी ने कैप्टन हरद्वारी सिंह की कंपनी को युद्ध में हथियार, गोला–बारूद आदि अनमेशन की कोई कमी न रहे आदि बारे जनरल शाहनवाज खान को आदेश दिया। कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत को रानी झांसी रेजिमेंन्ट को अंग्रेजों के घेरे से मुक्त करवाने के लिए मोर्चे पर तैनात किया। कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत अपनी गौरिला 'ए' कंपनी के साथ रात्रि में ब्रिटिश सैनिकों पर भूखे शेर की तरह टूट पड़े। दोनों तरफ से भारी गोलाबारी हुई। *INA* सैनिकों ने मोरटार–तोप के गोले दागे, कवरिंग फायर दी। कैप्टन हरद्वारी सिंह के आधीन दो मशीनगन थी। कैप्टन साहब ने दोनों मशीनगनों से बारी–बारी एक ही रात में चार हजार के लगभग गोलियां बरसाई जो विश्व रिकॉर्ड है। इस युद्ध में दुश्मनों के 300 के लगभग सैनिक मारे गये। आपने आगे बढ़कर रानी झांसी रेजिमेंन्ट को ब्रिटिश सैनिकों के घेरे से सकुशल मुक्त करवाया। आपकी वीरता से भारतीय–जापानी अफसर ही नहीं अंग्रेज अफसर भी दंग रह गये। रानी झांसी रेजिमेन्ट के सकुशल लौटाने पर नेताजी की चिन्ता दूर हुई। नेताजी ने कैप्टन हरद्वारी सिंह की पीठ थपथपाते हुए कहा *"You are Great"* हिन्दुस्तान को तुम पर गर्व है, तुम हिन्दुस्तान की शान हो। जनरल शाहनवाज खान ने कैप्टन साहब को खुशी से गले लगा लिया और कहा कि आपने वीरतापूर्वक जितने भी मोर्चे जीते हैं विश्व में ऐसी बहादुरी की मिशाल और नहीं है। आपको *INA* के सर्वोच्च वीरता अॅवार्ड शेर–ए–हिन्द से नवाजा गया था, आपने सिद्ध कर दिखाया है कि आप उसके सही सच्चे हकदार हो।

ब्रिटिश सरकार का सहयोगी अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा, नागासाकी नामक शहर पर हवाईजहाज से बहुत ही शक्तिशाली अणु बम डाल दिये। जिसमें लाखों बेगुनाह लोग और जीव–जन्तु मारे गये। जनता में हाहाकार मच गया। जापान ने ब्रिटिश सेना के आगे हथियार डाल सरेंडर कर दिया। उधर जर्मनी ने भी सरेंडर कर दिया। आजाद हिन्द फौज को जर्मनी और जापान से मिलने वाली रशद, गोला–बारूद बंद हो गया। अगस्त 1945 को आजाद हिन्द फौज ने जनरल शाहनवाज के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। ब्रिटिश सेना ने *INA* के 17000 सैनिकों को बंद बनाकर दिल्ली का लालकिला तथा दिल्ली छावनी आदि स्थानों पर रखा गया। 31 दिंसबर सन् 1945 को ब्रिटिश सरकार ने कैप्टन हरद्वारी सिंह सहित सभी युद्धबंदियों को रिहा कर दिया। दिनांक 03–03–1946 को कैप्टन हरद्वारी सिंह को डिस्चार्ज कर दिया गया।

lkekftd thou %& आप वीरता, ओलम्पियन के अतिरिक्त साफ–सुथरी छवि के सच्चे, ईमानदार और मेहनती इंसान थे। आप सामाजिक कार्यों में गरीब, विकलांग, बीमार पीड़ितों की सहायता करने, बेराजगारों को नौकरी लगवाने, स्कूल, कॉलेज, मन्दिर, गौशाला, धर्मशाला, चौपाल, वृद्धाश्रम आदि में बढ़–चढ़कर दान देने के लिए प्रसिद्ध थे। आपको केन्द्रीय व हरियाणा सरकार की ओर से 1- ब्रिटिश सेना, 2- आजाद हिन्द फौज, 3- राष्ट्रीय अनुशासन योजना (एन.डी.एस.) सहित तीन पेंशनें मिलती थी। आपके परिवार से ब्रिटिश आर्मी में भाई, चाचा,–भतीजों सहित सात व्यक्ति थे जिस कारण ब्रिटिश सरकार आपके परिवार को जागीरदारी सम्मान पेंशन देती थी। आपके जीवन से गांव डीघल और हरियाणा प्रदेश ही नहीं बल्कि सारा देश प्रेरणा लेता रहेगा। आप का पवित्र जीव दिंनाक 2 जून 1981 को अपनी देह छोड़कर स्वर्गलोक चले गए।

lEekfur ijLdkj %&

1- सन् 1932 को जाट सैन्टर बरेली के भव्यसमारोह में जाट ब्रिगेड के ब्रिटिश जनरल ने आपको जाट रेजिमेंट का सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ी का मैडल देकर सम्मानित किया तथा सिपाही से हवलदार के पद पर पदोन्नत किया।

2- सन् 1934 में आपने प्रथम पश्चिमी एशियाई हॉकी प्रतियोगिता में भारतीय टीम की ओर से भाग लिया। भारतीय टीम विजय रही। आपको सीनियर ब्रिटिश अफसर ने जाट सैन्टर बरेली में सम्मानित किया।

3- सन् 1936 में बर्लिन ओलम्पिक हॉकी जीतने पर आपको जाट सैन्टर बरेली, पंजाब सरकार, केन्द्रीय सरकार, जाट हाई स्कूल रोहतक, अहलावत खाप–27 आदि अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया।

4- सन् 1936 के बर्लिन ओलम्पिक हॉकी जीतने पर जाट

सैन्टर बरेली के भव्य समारोह में ब्रिगेड के ब्रिटिश जनरल ने आपको हवलदार से *J.C.O* प्रमोट किया।

5- सन् 1943 की सिंगापुर परेड़ में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने राईफल व पिस्टल शूटिंग मुकाबले में दोनों में प्रथम स्थान पाने पर आपको श्रेष्ठ निशानेबाज का पदक देकर सम्मानित किया।

6- सन् 1944 में युद्ध मोर्चा हाका–फलम की 7–8 हजार फुट ऊंची कलांग पहाड़ी की चोटी पर बनी ब्रिटिश चौकी पर 350 के लगभग अंग्रेज सैनिकों को मार कर कब्जा किया और तिंरगा झण्डा फहराने की बहादुरी और वीरता पर नेताजी ने आपको *INA* का सर्वोच्च वीरता पुरस्कार शेर–ए–हिन्द की उपाधि से सम्मानित किया।

7- सन् 1949 में रायपुर–मध्यप्रदेश के तत्कालीन राजा ने आपको खूंखार बब्बर शेर मारने पर रायपुर सियासत का तगमा देकर सम्मानित किया। उस समय आप रायपुर, मध्यप्रदेश होमगार्ड के कमाण्डेंट थे।

8- 15 अगस्त 1950 को दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने आपको ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया।

9- सन् 1955 में *N.D.S* के संस्थापक जनरल जे.के. भोंसले ने आपको उत्कृष्ठ कार्यों के लिए इण्डिया गेट दिल्ली की परेड पर प्रंशसा पत्र–देकर सम्मानित किया।

10- 6 अक्तुबर 1956 को भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आपको पद्मभूषण मैडल देकर सम्मानित किया।

11- सन् 1960 में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने आपको उत्कृष्ठ कार्यों के लिए इन्दौर शहर में आयोजित समारोह में प्रंशसा पत्र–देकर सम्मनित किया।

12- 14 नवम्बर 1963 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपने जन्मदिन पर अपने निवास तीन मूर्ति भवन, देकर सम्मानित किया।

13- 15 अगस्त 1971 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री चौ० बंसीलाल ने आपको स्वतत्रंता सेनानी ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया।

14- 15 अंगस्त 1972 को दिल्ली के एतिहासक लालकिले पर तत्काल प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ की सिल्वर जुबली के शुभ अवसर पर आपको ताम्रपत्र व स्वतंत्रता सेनानी पेंशन देकर सम्मानित किया।

15- 15 अगस्त 1973 को हरियाणा के राज्यपाल श्री बी.एन. चक्रवर्ती ने अपको ताम्रपत्र व शाल देकर सम्मानित किया।

16- 15 अगस्त 1974 को तत्कालीन केन्द्रीय रेलमंत्री जनरल शाहनवाज ने आपको एक सहायक के साथ आजीवन फ्री रेलयात्रा पास देकर सम्मानित किया। उसी दिन से देश के अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को फ्री रेल यात्रा पास की सुविधा दी गई।

17- 15 अगस्त 1976 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता ने आपको ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया।

18- 15 अगस्त 1978 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री चौ० देवीलाल ने आपको ताम्रपत्र, शाल, साफ, व डोंगा देकर सम्मानित किया।

19- 15 अगस्त 1980 को हरियाणा के तत्कालिन मुख्यमंत्री चौ० भजन लाल ने आपको ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया।

ukV %& सन् 1941 से सन् 1945 तक महान स्वतंत्रता सेनानी आजाद हिन्द फौज के जांबाज वीर योद्धा शेर–ए–हिन्द कैप्टन हरद्वारी सिंह अहलावत ने अपनी जान हथेली पर रखकर स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश सेना से बहादुरी के साथ जो भंयकर युद्ध किया और विजय प्राप्त की, जेल भी गये। ऐसे देशभक्त की मिशाल बहुत कम है। 5 वर्ष तक आपका कोई अता–पता नहीं था। घर–परिवार–रिश्तेदार व गांव वाले आपको मृत समझ चुके थे। ऐसे महान् देशभक्त स्वतंत्रता को कोटि–कोटि नमन।

मोह माया

fnu'k pekyk ^'ky'k*

आधा जीवन सोने में बीत गया और शेष आधा रोने में, किसी का कुछ बिगाड़ने और खाने में, संग्रह करने में और भविष्य की चिंता में। दुर्लभ जीवन कर अमृत, साधना, शक्ति, सृजन, प्रेरणा, उत्साह, प्रकाश, आनंद से परिपूर्ण घट निरर्थक रीत गया। यह अमृत की अकृत सपंदा निरूद्देश्य री गई । न इन अमोध शक्तियों से स्वयं को आनंद की प्राप्ति हुई, न इदन दुर्लभ शक्तियों–सिद्धियों से किसी और के प्रयोजन की सिद्धी हुई। सब कुछ मिला, कुछ न मिले से भसी बदतर हो गया। अज्ञानता के मद में मिला हुआ स्वर्ण महल व दुर्लभ वैभव अकारण चौपट हो गए। जीवन जीती हुई बाजी हार गया। जिसके लिये आए थे वह मंतव्य भूल गए तो क्या उद्देश्य व सार्थकता रही उस अथक यात्रा की ? हम कहा कहां से चले थे, पहुंचे कहां हैं, गंतवय क्या है ? यदि इन तीनों में सामंजस्य नहीं तो फिर लक्ष्य क्या रहा ? जो आज मेरा है वह कल उसका था परसों किसी ओर का हो जायेगा। फिर इस जीवन में क्षण–क्षण कमाकर, पल–पल गंवाकर बचाया क्या और किसके लिए ?

अधिक पाने व खाने की चाह में कभी भी जी भर खाया नहीं। जब भूख थी तो भोजन नहीं था। अब भोजन है तो भूख गायब। मुंह में दांत नहीं। पेट में आंत नहीं। फिर किसके लिए सहेजा, किसके लिए जोड़ा। किसी की अकृत संपदा के चौकीदार बनकर रह गए। जो कुचिंतन व कुकर्मो की सीढ़ियों से चढ़कर सपंदा मिली, वह उसी मार्ग से पश्चाताप व पीड़ा का दंश दे निकल जाएगी। संसार की सपूंर्ण सताएं व वैभव, स्वप्न में प्राप्त वैभवों के सदृश हैं। यदि सकारण आनन्द तलाशना है तो अकारण डूब जाएं ईश भज के शाश्वत अमृत कुंड में, जहां डूबते हुए भी आनन्द व डूबकर परमानन्द। कारणजन्य संसार अकारण पीड़ा देने को विवश है, लेकिन आकरण ईश भक्ति आनन्द के लोक सिंहासनारूढ़ होने का आमन्त्रण हैं। संसार के पास पीड़ा और पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं है। ईश्वर के आनन्दलोक में शाश्वत व अमृतरूपी आनन्द के सिवा कुछ नहीं तो क्यों न चुने दीर्घजीवी प्राण संजीवनी का यह शाश्वत आन्नद विकल्प।

मालचा गांव की जमीन पर बने हैं राष्ट्रपति भवन व चाणक्यपुरी

अंग्रेजों ने छीनी किसानों से जमीन- नहीं मिला मुआवजा

-एक रपट

राष्ट्रपति भवन, संसद भवन समेत दिल्ली के लुटियंस जोन के दावेदार सोनीपत के गांव हरसाना निवासी सज्जन सिंह का परिवार आजकल उत्साहित है। 5 पीढ़ी और सज्जन की 14 साल की मेहनत के बाद आखिरकार किसी ने तो माना कि वास्तव में यह दिल्ली उनके पुरखों व मालचा गांव के किसानों की है। इस मामले में दिल्ली हाईकोर्ट ने सज्जन सिंह की अर्जी पर सुनवाई करते हुए दिल्ली के उपराज्यपाल, शहरी विकास मंत्रालय तथा केंद्र सरकार से 4 सप्ताह में जवाब देने को कहा है। सुनवाई की अगली तारीख 30 नवंबर मुकर्रर की गयी है।

अब सज्जन सिंह को उम्मीद बंधी है कि उन्हें न्याय मिलेगा। सज्जन ने अदालत में दलील दी कि भूमि अधिग्रहण कानून की धारा 24 की उपधारा दो के तहत न तो उनके परिवार को मुआवजा मिला है और न ही कोई दूसरा लाभ। ऐसे में नियमानुसार उन्हें जमीन वापस दिलाई जाए। दूसरा जिस जमीन पर कोई भवन या सरकारी आवास बने हैं, उनका आज के बाजार भाव के हिसाब से मुआवजा दिया जाए। सज्जन सिंह ने फिलहाल, अपनी पुश्तैनी जमीन में अपने हिस्से की करीब 155 बीघा जमीन यानी 31 एकड़ के लगभग भूमि का मुकदमा अदालत में दायर कर रखा है। सीजरे के हिसाब से जिस जमीन पर सज्जन सिंह ने दावेदारी की है, वह 11 मूर्ति से थोड़ा आगे सरदार पटेल मार्ग पर पड़ती है।

अगर सज्जन सिंह इस मुकदमे में जीत जाते हैं, तो यह उनके लिए बड़ी उपलब्धि होगी, तो केंद्र व दिल्ली सरकार के लिए चुनौती है। मुआवजा नहीं दिये जाने के कारण मालचा गांव के अन्य किसानों को भी खाली पड़ी अपनी जमीन अथवा उसका आज के बाजार भाव पर मुआवजा मिलना चाहिये।

;g g tehu dh gdher

अंग्रेजी शासनकाल के समय में राष्ट्रपति भवन, संसद तथा लुटियंस जोन के नाम से मशहूर यह इलाका मालचा समेत कई गांवों का रकबा था। इसमें मालचा गांव की खेवट नंबर एक में 3862 बीघे 17 बिसवे जमीन एवं खेवट नंबर 7 की 4367 बीघे जमीन मालचा गांव के ग्रामीणों की है। इसमें से आधी जमीन अकेले गुलाब सिंह की है। 5 अप्रैल 1894 को गुलाब सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके बाद यह जमीन 4 हिस्सों में उनके बेटों शादीराम, सुखदेव, अमीचंद तथा अमर सिंह के नाम पर दर्ज हो गई। इसी बीच 1911–12 में अंग्रेजी हुकूमत ने दिल्ली को टारगेट करते हुए न्यू कैपिटल ऑफ इंडिया के लिए जमीन को चुना और यहां आबाद गांव मालचा को दिवाली की रात को जबरन खाली करा दिया। इसमें कई लोगों की जान भी गई। इनमें गुलाब सिंह के 2 बेटे अमीचंद और अमर सिंह की भी मौत हुई। बाद में ये ग्रामीण यहां से जान बचाकर सोनीपत के गांव रोहट में आ गए। यहां कई बरसों तक शरण लेने के बाद उन्होंने हरसाना गांव के पास जमीन खरीद कर मालचा पट्टी के नाम से खुद को दोबारा आबाद किया। दिल्ली सरकार के राजस्व रिकार्ड के अनुसार यह जमीन उनके नाम दर्ज रही। इसके बाद शादीराम ने 9 अप्रैल, 1912 को अंग्रेजी हुकूमत ने भूमि अर्जन कलेक्टर के यहां अर्जी दी और कहा कि उनकी जमीन का जबरन अधिग्रहण किया गया है। इसमें मालिकों को मुआवजा देने के लिए पार्टी बना लिया गया है। इसके बाद 1912 में इस जमीन के लिए अवार्ड हुआ, इसमें कहीं 24 रूपये तो कहीं 15, 36 और 40 रूपये प्रति बीघा के हिसाब से मुआवजा तय किया गया। साथ ही इस अवार्ड में बताया गया कि यहां से उजाड़े गए किसानों को पंजाब (अब हरियाणा) के करनाल, रोहतक तथा 2 बड़ी नहरों के बीच के इलाके अमृतसर के पास दोआब कैनाल इलाके में जमीन दी जा रही है। लेकिन न तो किसी किसान को आज तक जमीन मिली और न ही मुआवजा। हां, कुछ परिवारों ने यह राशि जरूर अंग्रेज हुकूमत से ली थी। इसके बाद से यह मामला अर्जी और फरियाद के रूप में खिंचता चला आ रहा है। शादीराम के बाद उनके बेटे छौलूराम मौन रहे। फिर उनके बेटे छोटूराम को भी इसमें मदद नहीं मिली। चौथी पीढ़ी में आकर ताराचंद ने इस मामले को नये सिरे से उठाया। 1991–92 में उन्होंने केंद्र सरकार से अपनी जमीन के लिए मुआवजा देने की अर्जी लगाई, लेकिन कोई हल नहीं निकला।

ikpoh ih<h dk lQyrk

पांचवीं पीढ़ी में आकर सज्जन सिंह ने 2000 में इस मामले को नये सिरे से उठाया। सज्जन पहले सबूत जुटाते रहे। उन्हें इसमें 10 साल का समय लग गया। उनका कहना है कि अब तक उनके करीब 88 लाख रूपये खर्च हो चुके हैं, लेकिन सज्जन ने हार नहीं मानी और आज उसकी बदौलत उनका मामला अदालत में पहुंच चुका है। सज्जन इस मामले के पूरे कागजात लेकर वरिष्ट अधिवक्ता रामजेठमलानी के पास पहुंचे। पूरा रिकार्ड देख रामजेठमलानी ने तत्कालीन शहरी विकास मंत्री कमलनाथ को 9 अक्टूबर, 2012 को पत्र लिखा और सारी स्थिति से अवगत कराया। इसका जवाब भी आया कि इसमें मंत्रालय छानबीन कर रहा है कि ये सब कैसे हो गया है। आज तक इन पीड़ित परिवारों को मुआवजा क्यों नहीं मिल पाया है।

अब इस जमीन में अपनी हिस्सेदारी 155 बीघा यानी 31 एकड़ के लिए दावा दिल्ली हाईकोर्ट में दायर किया गया है। सज्जन सिंह ने अदालत से मांग की है कि भूमि अधिग्रहण कानून 2014 के तहत उन्हें उनकी खाली जमीन वापस दिलाई जाए और जिस जमीन पर निर्माण हो गया है, उसका हाल के बाजार भाव के हिसाब से मुआवजा मिले। इस मामले में दिल्ली हाईकोर्ट की डबल बैंच ने 21 जुलाई 2015 को सुनवाई करते हुए शहरी विकास मंत्रालय, केंद्र सरकार तथा दिल्ली के उपराज्यपाल को नोटिस जारी कर 4 सप्ताह में जानकारी देने को कहा है। अब इस केस की अगली सुनवाई 30 नवंबर 2015 को होगी।

¼n- fV- l lkHkkj½

जीवन यात्रा

& ujUn vkgjtk

हम किसी भी छोटी सी यात्रा पर निकलते हैं तो उसके लिए पहले पूरी योजना बनाते हैं कहां से कहां तक किस वाहन से यात्रा करनी है, उसका पूर्व आरक्षण फिर समय से पूर्व पहुंच कर अपनी सुरक्षित सीट पर जाकर बैठना रास्ते में आवश्यकता अनुसार सारा सामान भोजन वस्त्रादि की पूर्व व्यवस्था करके चलते हैं। फिर जहां जाना है वहां रहने भोजन आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण करवा कर चलते हैं। यह सारी तैयारी हम यात्रा की सफलता और लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से करते हैं।

परंतु कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अपनी रोजमर्रा की इन छोटी-छोटी यात्राओं की इतनी तैयारी और मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन यात्रा के प्रति पूरी उदासीनता। छोटी सी यात्रा का लक्ष्य, मार्ग, मार्ग के वाहनों, भोजन, वस्त्र आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण आदि ताकि कोई कष्ट ना हो लेकिन अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य का निर्धारण शायद ही हममें से किसी ने किया हो। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अंतर्गत ईश्वर प्रदत्त अनमोल तन मनुष्य जीवन पाकर भी हम इसका उपयोग सही प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं। शरीर रूपी साधन का उपयोग हमें अपने लक्ष्य अर्थात जन्म जाल के बंधनों से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। परंतु हम अबोध शायद अपने अस्तित्व से भी अनभिज्ञ इन साधनों अर्थात मानव तन में उपलब्ध मन, बुद्धि, ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों को अपने अधीन रखने के स्थान पर शायद भौतिक शारीरिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध में सम्मोहित इन साधनों के अधीन होकर अपना मानव जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं।

हमारी स्थिति शराब पीकर अपनी सुध-बुध खोकर वाहन चला रहे चालक की भांति है जो गति के रोमांच के वशीभूत उस वाहन को अपने अधीन रखने के स्थान पर वाहन अधीन होकर दुर्घटना कर बैठता है और इस गति के रोमांच में जीवन समाप्त कर लेता है। ठीक इसी प्रकार हम भी इस तथाकथित विकास के नाम पर भौतिक सुख-सुविधाओं को इकट्ठा करने के अंतहीन चाह में मन के वश में और अपने लक्ष्य से भटक कर बड़ी तीव्र गति से जीवन यात्रा कर रहे हैं। ईश्वर ने यह अनमोल मानव तन हमारे उपयोग के लिए दिया था परंतु हम शायद इसके ठीक विपरीत इसका उपयोग अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति के लिए ना करके तथाकथित विकास की चकाचौंध में सम्मोहित अपने विनाश की ओर बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हैं।

हम कैसे अबोध हैं कि हम अपनी इतनी महत्वपूर्ण जीवन यात्रा में लक्ष्य के विपरित दिशा में दौड़े चले जा रहे हैं। शायद हमें अपने लक्ष्य का कोई ज्ञान नहीं और यही अज्ञानता अबोधता हमारे दुःखों का कारण है। छोटी सी बस यात्रा करते समय तो पूरी तैयारी लक्ष्य का निर्धारण पूर्व आरक्षण रास्ते की वस्त्र भोजनादि की व्यवस्था परंतु जीवन यात्रा में साधनों को अधीन रखने के स्थान पर साधनों के अधीन होकर झूठे विकास की चकाचौंध से सम्मोहित विनाश की गहरी खाइयों की ओर बड़ी तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। इस अंधी दौड़ में कहीं पीछे न छूट जायें इसलिए कहीं रूककर अपनी दिशा और दशा पर चिंतन करने की भी कोई संभावना प्रतीत नहीं होती।

अब अंत में यह प्रश्न उठता है कि हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य क्या हो? उस लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो उस मार्ग पर हम कैसे चलें और लक्ष्य को प्राप्त करें। मनुष्य को जीवन यात्रा का लक्ष्य बिल्कुल साफ स्पष्ट मोक्ष की प्राप्ति जिससे हम अर्थात जीवात्मा आनंदस्वरूप परमात्मा के परम आनंद में अपनी आत्मा को मग्न कर सकें और जन्म जाल अर्थात लाख चौरासी के चक्कर से मुक्ति पा सकें। अब प्रश्न है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन क्या हो तो ईश्वर प्रदत्त यह अनमोल मानव शरीर इसकी मन बुद्धि ज्ञानेंद्रियां और कर्मेंद्रियां इस लक्ष्य प्राप्ति का साधन हैं और हमें इन साधनों को विशेष रूप से अत्यंत चंचल सर्वाधिक गतिशील मन को अपने नियंत्रण में रखकर ईश्वर प्राप्ति अर्थात उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगाना है। अब जब लक्ष्य और साधन स्पष्ट हैं तो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो तो यह मार्ग है अपने साधनों को अपने नियंत्रण में रखकर आत्मा की उन्नति के लिए सत्कर्म व परोपकार के यज्ञीय कार्य करते हुए अपने जीवन को यज्ञमय बना लेना। और निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अंततः हमें हमारे सद्कर्मों निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों का फल हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। हम सभी अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य को पहचानें और उसकी प्राप्ति का प्रयास करें

हमें जिन पर गर्व है

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के आजीवन सदस्य श्री महाबीर सिंह सांगवान के सुपुत्र सुमीत सांगवान ने सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेन्डरी एजूकेशन दिल्ली द्वारा आयोजित 10+2 की परीक्षा 2015 माऊंट कारमेल स्कूल सैक्टर–47 चंडीगढ़ से 93.3 प्रतिशत अंक प्राप्त करके उतीर्ण की।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला इनकी शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।